मई-२०१० किंमत रू. ५/-

# श्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण मंदिर
अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव के
सान्निध्य में अधिक पुरुषोत्तम मास में
अलौकिक दर्शन

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

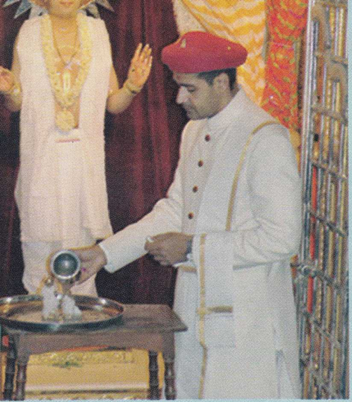

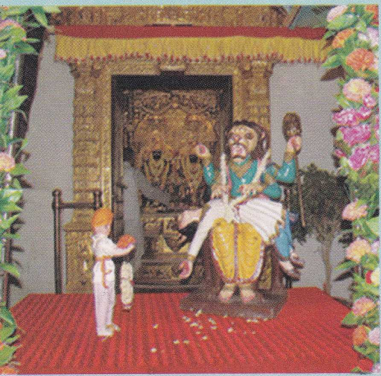

श्रीहरि के ६ठे, ७ वें तथा ८वें
वंशज की उपस्थिति में अधिक वैशाख मास
में श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद
में भव्याति भव्य ढंग से मनाये गये

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ ( मंदिर )
२७४७८०७० ( स्वा. बाग )
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी ( महंत स्वामी )
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

**मूल्य**
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

# श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ४ अंक : ३७ मई-२०१०

## अ नु क्र म णि का

१. अस्मदीयम् २
२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ३
३. डिप्रेशन ४
४. रहो एकादश निमय में, करो श्रीहरि पद प्रीति ६
५. ध्यान निष्ठाय नमः ७
६. भगवान श्री स्वामिनारायण का ऐश्वर्य ८
७. एकादशी ९
८. आनंददायी तथा कल्याणकारी श्रीहरि की प्रसादी की धोती १०
९. किस सम्बन्धकी महत्ता ११
१०. सत्संग सुरभि १२
११. सत्संग बालवाटिका १३
१३. भक्ति सुधा १५
१४. सद्धसंग समाचार १८

# सम्पादकीय

एक भक्त के लिये, एक सत्संगी के लिये कहाजाने वाला महोत्सव का मास अर्थात् पुरुषोत्तम मास ( अधिकमास )। भक्त इस अधिक महीने में आने वाले सभी उत्सव धूमधाम के साथ मनाते हैं। भक्तों के लिये यह उत्सव नई चेतना लेकर आता है। इसीलिये कालिदास ने ''उत्सवप्रिया: मानवा:'' इस तरह लिखा है। जिस तरह मनुष्य अपने जीवन की क्रियाओं से क्रमश: निवृत्त होता जाता है ठीक उसी तरह सत्संगियों के लिये हारमाला की तरह एक-एक उत्सव आते रहते हैं। इसीलिये श्रीहरि इस पृथ्वी पर अवतरित होकर सत्संगियों के लिये उत्सवों की परंपरा दी। श्रीहरि स्वयं उत्सवों के चाहक थे। गाँव-गाँव में जाकर उत्सव को करवाते। जैसे उत्सव श्रीहरि करते वैसी झांकी का दर्शन आज भी हम सभी को मिल रहा है। उसी उत्सव की श्रृंखला में एक उत्सव आ रहा है, ''श्री नरनारायणदेव नूतन मंदिर महोत्सव'' श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज आयोजित ता. १५-५-१० से ता. २३-५-१० तक।

श्रीहरिने इस पृथ्वी पर पधारकर नये-नये मंदिर का निर्माण किया। जिस में एक मंदिर श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज का था। जिसका निर्माण तथा मूर्ति प्रतिष्ठा अपने हाथों से करके भक्तों के लिये मोक्ष का द्वार खोल दिया। अनिवार्य संयोग वस ( इ.स. २००१ के भूकंप में वह मंदिर जीर्ण हो गया था। श्री नरनारायणदेव की जैसी इच्छा हो, उसी तरह दूसरे स्थान पर मूर्तियों का स्थलान्तर किया गया। संत, भक्त सभी साथ मिलकर थोड़े समय में ही भव्याति भव्य सफेद मारबल का ''न भूतो न भविष्यति'' मंदिर बनाने का आयोजन किया। अब वह मंदिर पूर्णता की कगारपर है, अत: सभी भक्त जन मंदिर के उत्सव में तन, मन, धन की सेवा करके आत्मलाभ ले ऐसी परमात्मा के श्रीचरणों में प्रार्थना।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

# प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा
## (अप्रैल-२०१०)

३१. मार्च से १४ अप्रैल तक न्युझीलेन्ड तथा आस्ट्रेलिया के धर्मप्रवास में पदार्पण।

१५. श्री विठ्ठलभाई डाभी (सिकवेरा टेलर्स) के यहाँ पदार्पण, नारणपुरा।
श्री गांडालाल पटेल (गुलाबपुरावाला) के देवमेटल इन्डस्ट्रीझ में पदार्पण, नरोडा।

१६. स.गु. निष्कुलानंद स्वामी के जन्म स्थान शेखपाट (हालार - मूलीदेश) गाँव में सत्संग शिबिर प्रसंग पर पदार्पण।

१७. अधिक वैशाख शुक्ल-३ को श्री नरनारायणदेव का अभिषेक अपने वरदहाथों से किये।

१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर स्कूल के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण।

२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२३. श्री स्वामिनारायण मंदिर खारवा (मूलीदेश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२५. अधिक वैशाख शुक्ल-११ को अहमदाबाद मंदिर के रंग महल घनश्याम महाराज का अभिषेक अपने वरद् हाथों से किये।
श्री स्वामिनारायण मंदिर झुंडाल सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।

२६. चेनपुर गाँव में श्री परसोत्तमभाई नारणभाई पटेल के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण

२७. कुंडाल (ता. कडी) कला भगत के पास में चरणारविंद के जीर्णोद्धार प्रसंग पर पदार्पण।

२९. श्री स्वामिनारायण मंदिर जसापर (मूलीदेश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

३०. लुणावाला बहनों के श्री स्वामिनारायण मंदिर के खात विधिप्रसंग पर पदार्पण।

**श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट**

**www.swaminarayan.in**

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० • शृंगार आरती ८-०५

• राजभोग आरती १०-१० • संध्या आरती १९-३० • शयन आरती २०-३०

# डीप्रेशन

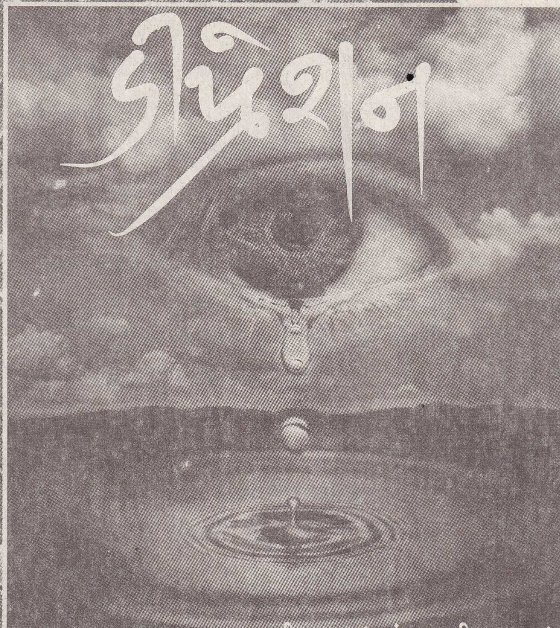

- साधु घनश्यामप्रकाशदास, जमीयतपुरा ( महंत स्वामी माणसा )

डिप्रेशन का मतलब युवानी में बुढापा आना । एकदम जीवन में आनंद का अभाव, उमंग, उत्साह रहित जीवन । जिस तरह उत्साह के साथ आकाश में उडने वाली पतंग हवा के अभाव में निरुत्साहित एवं मंदगति की होजाती है ठीक यही स्थिति मनुष्य के जीवन में डिप्रेशन लाती है । मानसिक वेचैनी, असह्य चिन्ता, आत्महत्या का चिन्तन जब जीवन में आने लगें तब समझलेना चाहिये की डिप्रेशन से वह घिर गया है।

इसका कारण यह है कि - इस पर एक कहावत है - ''बड़े के पीछे छोटा जाय मरे नही लेकिन विमार रहे'' वह बिमारी ही डिप्रेशन है । प्रत्येक कलाकार को अमिताभ बच्चन तथा प्रत्येक क्रिकेटर को सचिन तेन्डुलकर को आदर्श मानना अच्छा है । शहर की गलियो में घूमने वाला फेरिया धीरुभाई अंबाणी को प्रेरणा रुप माने, ट्रेन में घूमने वाले साधु स्वयं को स्वामी विवेकानंद से अधिक समझ ले लेकिन पुरुषार्थ के बिना उपरोक्त सभी आदर्श असंभव है। जहाँ तक पहुँचा न जासके ऐसी महत्वाकांक्षा भी डिप्रेशन का कारण है । यहीं से डिप्रेशन का बीज अंकुरित होने लगता है । दूसरा कारण है - देखादेखी । प्रत्येक के प्रारब्ध-अलग-अलग होते हैं । कोई राजा तो कोई रंक । कोई अमीर तो कोई गरीब, कोई विद्वान तो कोई मूर्ख । सभी के संयोग तथा पुरुषार्थ में भिन्नता है।

बाल्यावस्था से प्रारम्भ ईर्ष्या का भाव बड़े-बड़े को हतोत्साहित करता है । असूया जैसा सूक्ष्म दोष हृदय में बैठकर धीरे-धीरे जलाता रहता है । मत्सर भी मन को सतत घायल करता रहता है । टी.वी. के झंझावात के वाईरस में बड़े-बड़े लोगो के मन विचलित होने लगे है । यह एक दीमक तथा केन्सर जैसा घातक रोग है । इसके अलांवा आहार तो इस हद तक सभी का गिर गया है कि बजारु भोजन तथा अभक्ष्य आहार भी मनोविकार में कारण है । छोटे-बडे सभी प्रकार के व्यसन आर्थिक एवं शारीरिक क्षति पहुंचा ही रहे हैं । जिसके परिपाक रुप में डिप्रेशन सभी को भेंट के रुप में मिलता जा रहा है । सामने की समानता का भाव इसके पास यह है, यह बड़ा आदमी है, हमारे पास यह नहीं है, इसी डीप्रेशन के कारण आदमी नाना प्रकार के न करने योग्य कार्य करता है । आत्मविश्वास ही जीवन का असली रसायन है । लेकिन आत्मविश्वास जब समानता की तरफ ध्येय करने लगता है तब आत्मविश्वास डिप्रेशन की तरफ ले जाता है और वह आदमी मौत के सागर पर खड़ा हो जाता है । इसीलिये कहा है -

जींदगी जे जीववा, हिंमत जरा ए घरमा ।<br>
आंसु छे मोंदा आंखमांथी सारमा ॥

नहीं तो

शब्दे मार्यो मरी गया, ने शब्दो छोड्या राज,<br>
जेवो शब्द विचार्या, तेना सरीया काज ॥

कटाक्ष शब्द, किसी की कमजोरी को देखकर उस पर व्यंग्य का शब्द बाण भी डिप्रेशन में कारण है । इस के साथ बढ़ती हुई महंगाई, बेकारी, बेरोजगारी, सामाजिक खर्चालुरीति रिवाज, अंधश्रद्धा तथा अज्ञान ए सभी डीप्रेशन के कारण हैं । मानसिक तनाव, तथा डिप्रेशन के मायाजाल से निकलने के उपाय का चिन्तन करते हैं -

विज्ञान के विना मनुष्य लंगडा है । भगवान में विश्वास के बिना अंधा है । महान वैज्ञानिक आइन्टस्टाइन ने कहा है कि ''भगवान मे श्रद्धा हो ऐसा एक भी पागल मनुष्य दिखाई नहीं दिया ।'' पागलपना का सबसे बड़ा इलाज भगवान में अटूट श्रद्धा है । भगवान को कष्ट निवारक तथा सुखमात्र का दाता कहा गया है । इसलिये डीप्रेशन में से बाहर लाने वाले मात्र भगवान ही है, भगवान की दृढ उपासना से यह

कार्य सम्भव हो सकता है । इसके साथ सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का दृढ आश्रय होतो निर्भयता, निश्चिंतिता तथा निर्दोष आनंद मिलता रहेगा, यह एक रामबाण औषधिहै । इसके अभाव में ही सभी डीप्रेशन में रहते है और नाना प्रकार की यातना सहते रहते हैं । दृढ उपासना तथा परिपक्व आश्रय करा देने वाले सच्चे संत मिल जायं तो बेड़ा पार समझना चाहिये । ब्रह्मानंद स्वामीने लिखा है कि -

"संत समागम कीजे, हो निशदिन संत समागम कीजे।"

दूसरा संतोष यह सबसे बड़ा गुण है । दूसरे के महल को देखकर अपनी झोपड़ी जला नही देना चाहिये । अंग्रेजीमें कहा है कि **Looking Below** इसका मतलब यह हुआ कि अपने से कमजोर व्यक्ति को देखेंगे तो सुखी रहेंगे । नाथ भक्त अपने शेठ से कहे कि आप अच्छा तो खाते हैं, और हम रोटी-मर्चा भी भगवान का भोग लगाकर खाते हैं। बाघरी जाति में जन्मलिये हुये सगराम भाई तो अमीरी की धज्जी उड़ाते हुये कहे कि "भगवान भले अमीरी नही दिये लेकिन कृपा करके प्रसादी में करीबी तो दिये हैं, उसी में आनंद लेंगे । अब आप कहिये इन्हे कौन दुःखी कर सकता है।" इसलिये सखा भाव में ही सुख है । स.गु. गुणातीतानंद की वातो में लिखा है कि "अन्तरमां टाढु रह्या करे ने दागीनां जाय तेना बे उपाय दे, एक तो भगवाननुं भजन करवुं अने बीजुं भगवानने सर्वकर्ता समजवा तेमां सुख आवे तो सुख भोगी लेवुं ने दुःख आवे तो दुःख भोगी लेवुं ते कह्युं छे के "दासना दुश्मन हरि केदी होयज नहीं ते केम करशे तेम सुखज थाशे ।" इस प्रकार की समझ हो तो मनुष्य सुखी होता है, दुःख कभी उसके पास नहीं आवे । ईसु ख्रीस्ती कहते थे कि आनंद में रहना तथा सदा धैर्य रखना इससे बड़ी कोई प्रार्थना नहीं है । यह कोई सांप्रदायिक वात नहीं है, यह मानवमात्र के लिये है । **Failer is no silv it is steping stone to suceess** निस्फलता यह दोष नहीं है लेकिन सफलता की प्रथम सीढी है।

इसीलिये दृढ आत्म विश्वास तथा भगवान की प्रार्थना के साथ कर्म योग करना चाहिये । इससे मानसिक डीप्रेशन बहुत दूर भाग जायेगा । कुछ उद्धरण यहाँ प्रस्तुत करते हैं।

भारत प्रख्यात सितारवादक, सरदार गुरु चरणसिंह के पग में एकबार गोली लग गई, इसलिये एम्ब्युलेन्स में तात्कालिक होस्पिटल में लेगये । रक्त खूब बह रहा था । डॉक्टर ने कहा अभी भी गोली पग में है इसलिये आपरेशन करना पडेगा । डॉक्टर एनस्थीशिया द्वारा शरीर शून्य करने की तैयारी कर ही रहे थे किउन्होने कहा इस तरह मेरी शरीर को शून्य मत कीजिये मेरे हाथ में सितार दे दीजिये, मै जब सितार बजाता हू तब शरीर का भान भूल जाता हूँ। ऐसा ही हुआ कि सितार बजाने में इतना मशगुल होगये कि आपरेशन हो गया उन्हे कोई दुःख दर्द का आभास भी नहीं हुआ।

सरदार वल्लभभाई पटेल के पैर में फोड़ा हो गया था, पक कर पीप भर गयी थी । डोक्टर के यहाँ गये, डॉक्टरने कहा चीर कर पीप निकालना होगा, आप भरती होजाइये आप के पैर को शून्य करना होगा । सरदार पटेलने कहा, मुझे लोग लौहपुरुष कहते है "और आप शून्य करने की बात करते है" - आप विना शून्य किये आपरेशन कीजिये, ऐसा ही हुआ बिना शून्य किये आपरेशन होगया उन्हें खबर तक नहीं पड़ी । इस तरह बहुत सारे उदाहरण देखने में मिलते हैं।

लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री के पद पर ही मृत्यु प्राप्त किये उनके मरने के बाद पंद्रह सौ रुपये का कर्ज था । लेकिन गरीबी होने पर भी कभी डीप्रेशन में नही आये और कभी लांच रिश्वत की तरफ हाथ नहीं बढाये । गुलजारीलालनंदा तथा मुरारजी देसाईजी का जीवन कुछ ऐसा ही आदर्श पूर्ण था।

महान वैज्ञानिक आइन स्टाईन के साठ वर्ष में रिटायर्ड होने के बाद उनके मकान में आग लग गयी उनके जितने शोधपत्र थे सब जल गये, उस समय वे अपनी पत्नी को बुलाकर ले आये और कहने लगे देखो मेरी तपस्या की ज्वाला मेरी बुढौती को भुलाकर पुनः युवानी की तरफ ले जाने को प्रेरित कर रही है । अब मैं पुनः अपनी रचना को जागृत करुँगा । ऐसा ही किये नये नये संशोधन किये दुनिया को उन्होंने उसके बाद चारसौ जितने शोधकरके दिये । इसी तरह आप सभी भी नरबस कभी नहीं होना और आनेवाली जिन्दगी में सचेत होकर सदा जागृत अवस्था का अनुभव करते हुये हर परिस्थिति का मुकाबला करते हुये आगे बढना। जितने भी अवतार हुये तथा संत एवं हर कोई सफल व्यक्ति किसी न किसी कसौटी में से निकले ही है । विचार पवित्र हो, पुरुषार्थ उम्मदा हो, तो निश्चित ही जीवन में सफलता मिलेगी।

# रहो एकादश निमय में, करो श्रीहरि पद प्रीति

- शा. स्वा. अभयप्रकाशदास गुरु महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी ( नारायणघाट )

( १ ) हिंसा न करनी जन्तु की :-

भगवान के प्रेम मूर्ति संत स.गु. प्रेमानंद स्वामीने प्रार्थना के पद में इग्यारह नियम लिखे जिसमें सर्व प्रथम "हिंसा न करनी जन्तु की" इसका उल्लेख किया हैं।

अपने शास्त्रों में भी अहिंसा के ऊपर खूब बल दिया गया है। "अहिंसा परमो धर्मः" ऐसा कहा गया है। छोटे से छोटे जीव की हिंसा का निषेधकिया गया है।

भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री में लिखा है कि -

कस्यापि प्राणिनो हिंसा नैव कार्याऽत्र मामकैः ।
सूक्ष्मयूकामत्कुणादेरपि बुद्धया कदाचन ॥

हमारे जितने सत्संगी है वे सभी जीव मात्र की हिंसा न करे। जानकर भी जू, खटमल, इत्यादि की हिंसा तो कभी नहीं करनी चाहिये।

किसी महिला के बाल बड़े हों तो उसके पीछे बैठकर दूसरी महिला उसके बाल में से जू निकालकर नखपर रखकर दबाकर मारती है, और खुश होती है महाराज ऐसे सूक्ष्म जीव कीं हिंसा न करने की आज्ञा किये है। हम सभी श्रीहरि के आश्रित हैं इसलिये उनकी आज्ञा मानकर ज्ञात-अज्ञात में किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिये। जैसे रसाई के काम में शाग सुधारते समय ध्यान न रखें तो गोभी में, भंटे में, भींडी में, शाग में हिंसा होने की संभावना है। इसी तरह दाल में चावल में भी ध्यान रखने की आवश्यकता है। पानी, दूधछानकर ही पीना चाहिये जिससे सूक्ष्म जन्तु की हिंसा न हो जाय।

सत्संगिजीवन में ऐसा कहा गया है कि गृहस्थ के घर में पांच स्थानों पर हिंसा तो होती ही है -

( १ ) ओखरी, ( २ ) चक्की, ( ३ ) चूल्हा, ( ४ ) पनीयारा, ( ५ ) झाणू।

ओखरी में छोटे-छोटे जन्तु की हिंसा होती ही है - जांता ( चक्की ) में पीसते समय, चूल्हे पर रसोई बनाते समय, पनीयारी के नीचे, झाणू से बटोरते समय ज्ञात अज्ञात में जन्तु की हिंसा होनेवाली है तो क्या करना चाहिये ? इन पांच प्रकार के हिंसा के प्रायश्चित्त से दूर होने के लिये नित्य पांच प्रकार का यज्ञ करना चाहिये।

( १ ) देवयज्ञ - नित्यप्रति भगवान का पूजापाठ करना चाहिये।

( २ ) भूतयज्ञ - गाय को चारा खिलाना, कुत्ते को रोटी खिलाना, कौवे को तथा अन्य पक्षी को चारा खिलाना।

( ३ ) पितृयज्ञ - माता-पिता की सेवा।

( ४ ) अतिथि यज्ञ - अतिथि का सेवासत्कार करना।

इस तरह पांच प्रकार के यज्ञ द्वारा हिंसा न करने की बात की गयी है। सूक्ष्म जंतु की हिंसा का निषेधकरके भगवान स्वामिनारायण ने अन्य जीवों की हिंसा के निषेधपर बल दिया है -

"देवता पितृयागार्थमप्यजादेश्च हिंसनम् ।
न कर्तव्यमहिंसैव धर्मः प्रोक्तोऽस्ति यन्महान ॥"

देवता तथा पितृ के यज्ञ में भी बकरा, मृग, खरगोस, मछली, इत्यादि की हिंसा नहीं करनी चाहिये। अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। यही सर्व शास्त्र का रहस्य है।

यज्ञ - यागादिक के लिये भी हिंसा नहीं करनी चाहिये। हिंसा को सदा रोकने का प्रयाश करना चाहिये। हिंसा में दो प्रकार बताये गये हैं - एक हिंसा करने वाला दूसरा हिंसा में सहकार देने वाला। भगवान स्वामिनारायण ने हिंसा की चर्चा करते हुये शिक्षापत्री में लिखा है -

"स्त्रिया धनस्य वा प्राप्त्यै साम्राज्यस्य च वा क्वचिद् !
मनुष्यस्य तु कस्यापि हिंसा कार्या न सर्वथा ॥"

किसी की हिंसा करने से स्त्री, धन या राज्य की प्राप्ति होती हो तो भी लोभ में आकर हिंसा नहीं करनी चाहिये।

हिंसा तीन प्रकार से होती है - कायिक, मानसिक वाचिक। कायिक अर्थात् शरीर का नाश करना, मानसिक मन से हिंसा करना, वाचिक - वाणी द्वारा होने वाली हिंसा।

तलवार हाथ में हो तो हिंसा के लिये नहीं होती रक्षा के लिये होती है। वाणी भी धारदार होती है लेकिन उसका उपयोग खराब शब्द या अपमान जनक शब्द के लिये नहीं होना चाहिये। जैसे द्रोपदी तलवार लेकर मैदान में नही गयी थी, लेकिन उनकी तीक्ष्ण वाणी रुपी तलवार ने महाभारत करवा दिया। अपनी वाणी भी ऐसी नहीं होनी चाहिये।

इसी तरह मन से भी किसी के खराब का संकल्प नहीं करना चाहिये।

हम हिंसा नहीं करेंगे लेकिन व्यवहार तथा वाणी के प्रयोग भी इस तरह न हों कि वह हिंसा जैसी हो।

# ध्याननिष्ठाय नमः

– स्वा. नारायणमुनि गुरु महन्त शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी ( अहमदाबाद )

महाभारत में भगवान के हजार नाम बताये गये हैं। जबकि सत्संगिजीवन में शतानंद स्वामी ने कलियुग में जीवात्मा सरलता से उसका पाठ करसके इसको ध्यानमें रखकर १०८ नाम लिखा है। जिसे हम जनमंगल के नाम से जानते हैं। उस जनमंगल में महाराज का एक नाम ध्यान निष्ठाय नमः लिखा है। श्रीजी महाराजने वचनामृत में ध्यान करने पर खूब बल दिया है। ध्यान की खूब महिमा बताई है। आध्यात्मिक दृष्टि से तथा शारीरिक स्वास्थ्य के लिये भी ध्यान का खूब महत्व है। आज कल ऐसा संशोधन हो रहा है, जब कि प्राचीन काल से ही ध्यान की विधिऐसी बताई गयी है कि जो सदा हार्ट इत्यादि के लिये दवा खाते हों वे ध्यान की प्रक्रिया से ठीक हो सकते है। डॉक्टर भी सलाह देने लगे हैं। ध्यान की विधिसमझने के बाद उसी क्रम से किया जाय तो शारीरिक मानसिक बहुत लाभ मिलता है। इस ध्यान की प्रक्रिया से कारण शरीर की वासना जलजाती है। परमात्मा के ध्यान से कारण शरीर की वासना को जलाया जा सकता है। अन्य कोई दूसरा उपाय नहीं है। अपने शरीर के अंदर कारण शरीर है। यह पंचभौतिक शरीर है। यह स्थूल है। इसी में सूक्ष्म तत्व प्रधान शरीर भी है। इस में भी कारण शरीर है।

इसे वासनामय कहते हैं। कारण शरीर वासना से बनी है। वासना का नाश नहीं होता। इसके लिये ग.म.प्र. वचनामृत में महाराज ने कहा है कि जिस तरह खाटी आंबलीनी जे शिंगो थाय छे, एनुं ऊपलुं पड साव पोचुं होय छे। थोड़ा दबाने पर ही टूट जाता है। इसके भीतर की जो खटाश होती है उसे कीसी साधन से अलग किया जा सकता है। उसके नीचे भाग में कालाबीज होता है जिसे कचुको कहते हैं। इसके ऊपर की काली छाल अलग नहीं होती। हथौडा से भी उसे अलग नहीं किया जा सकता। बीज के ऊपरी छाल को अलग करना हो तो थोड़ा शेक कर दिया जाय तो बड़ी सरलता से बीज से छिलका अलग हो जायेगा। इसी तरह शरीर में भी कारण शरीर है( स्थूल शरीर )। भीतर सूक्ष्म शरीर है। सूक्ष्म शरीर में जो खटाश भाग है वह कभी दूर नहीं होता चाहे जितना भी व्रत, तप करें। सौभरी ऋषि साठ हजार वर्ष तक तप किये लेकिन कारण शरीर की वासना साठ हजार वर्ष के बाद भी विवाह के लिये प्रेरित की। च्यवन ऋषि इक्कीस हजार वर्ष तक तप किये। इस तरह तप किये कि उनकी शरीर पर मिट्टी का पहाण हो गया। उस च्यवन ऋषि के आश्रम में एकबार एक राजा अपने परिवार के साथ आये। राजा की कन्या आश्रम में घूमने निकली घूमते घूमते वहाँ पहुँची जहाँ च्यवन ऋषि तप कर रहे थे। उनके शरीर पर मिट्टी का पहाण हो गया था। लेकिन आंख के भाग से तेज निकल रहा था, उस कन्या को कुतूहल हुआ कि यह प्रकाश इस मिट्टी में से निकल रहा है देखें तो सही क्या है, उसने एक कांटा लिया और उस बिल में डाला कि खून निकलने लगा। वे ऋषि समाधिसे जाग गये और क्रोधमें आकर कहने लगे कि मेरे आश्रम में जो भी आये हैं सभी का मल मूत्र बन्द हो जाय। एक ही साथ सभी का मल मूत्र बंद हो गया। यह देखकर सभी परेशान हो गये। राजा बड़े सात्विक थे, उन्हें ख्याल आ गया कि किसी से कहीं भूल अवश्य हुई है इसलिये सभी से पूछे तो उनकी पुत्री सुकन्याने कहा पिताजी एक बिलि में से प्रकाश निकल रहा था मैं कौतुक वश उसमें कांटा डाल दिया और खून निकलने लगा। राजाने अपने पुत्री का अपराधसमझकर वहाँ गये जहाँ पर ऋषि तप कर रहे थे। मिट्टी हटाने पर भीतर से ऋषि की शरीर दिखाई दी। आँख में से रक्त बह रहा था। राजा ने माफी मांगी हे ब्रह्मन् ! क्षमा कीजिये, मेरी बेटी से यह अपराधहुआ है। आप जो आज्ञा करे हमें स्वीकार है। ऋषिने कहा इस कन्या का विवाह मेरे साथ कर दीजिये आप सभी का मल-मूत्र ठीक हो जायेगा। विचार करने लायक है जो इक्कीस हजार वर्ष तक तप किया था। उसके कारण शरीर से वासना नहीं गयी थी। जिस तहर इमली के ऊपरी भाग को थोड़ा गरम करने से अलग हो जाता है, उसी तरह कारण शरीर की वासना परमात्माके ध्यान रुपी अग्नि में शेकने से दूर होती है। जप, तप से वासना नहीं जाती बल्कि परमात्मा के ध्यान से वासना दूर होती है। इसीलिये महाराजने "ध्यान निष्ठाय नमः" कहा है। महाराजने शिक्षापत्री में कहा है कि ध्यान केवल परमात्मा का ही करना चाहिये। चाहे कोई कितना बड़ा ब्रह्मवेत्ता हो तो भी उसका ध्यान नहीं करना चाहिये। इसलिये प्रतिदिन महाराज का ही ध्यान करना चाहिये . इस अधिक मास में महाराजकी

भजन, भक्ति, सेवा, व्रत, दान, तप जो भी होसके शुभ कर्म करना चाहिये । कारण यह कि इस अधिकमास में किया गया पाठ अधिक फलकारक है ? इसलिये जनमगंल का पाठ अवश्य कीजियेगा -

दशावृत्या प्रतिदिनमस्याभीष्टं सुखं भवेत् ।
गृहिभिस्त्यागिभिश्चापि पठनीयमिदं ततः ।

स्वामीने कहा है कि भगवान के आश्रित त्यागी गृही सभी इस जनमंगल का अवश्य पाठ करें । आप सभी लोग इस अधिक मास में जनमंगल पाठ करने का नियम अवश्य लेंगे । यह जनमंगल नामावली स्वामीने ध्यान पूर्वक लिखा है । यह महाराज का नाम बड़ा ही मंगलकारी है । इसका प्रतिदिन पाठ करना जिससे महाराज अपने ऊपर प्रसन्न हो सकें ।

# भगवान श्री स्वामिनारायण का ऐश्वर्य

- साधु अजयप्रकाशदास गुरु जयप्रकाशदास ( मूली )

### प्रताप निरुपण

श्रीजी महाराज तीर्थाटन करते हुये सर्व प्रथम लोज गांव में पधारे, उस समय उनके पास कौपीन तथा तुमडी के सिवाय कुछ नहीं था । फिर भी करोड़ो रुपये के अनेकों मंदिर बनवाये, लाखो रुपये खर्च करके यज्ञ किये । समर्थ रामानंद स्वामी के सत्संग को विशाल फलक पर रख दिये । सुप्रसिद्ध विद्वान कवि, उत्तमकोटि के गायक, प्रखर पंडित, आर्षद्रष्टा लेखक, वचनसिद्ध संत तैयार किये ।

विविधमत, पंथ के महामंडलेश्वरों को नतमस्तक कर दिये । इतना ही नहीं बल्कि उन्हें अपने शरण में लेकर अपना आश्रित भी बनाये । जिस में - कबीर पंथी, साधु समाज, रामानंद, शक्तिपंथी, जैन मतवाले भी आश्रित हुये थे। वैष्णव शिरोमणि हेमराज शेठ, उमरेठ के शाक्त मतवाले ब्राह्मण तथा सूरत के पारसी जाति के आगेवान अरदेसर कोटवाला, खोजा, वोरा तथा मुश्लिम भी भगवान श्री स्वामिनारायण के योग में आते ही ईश्वरीय प्रताप से प्रभावित होकर अनन्य आश्रित हो गये थे ।

### विद्वानो को भी वश मे किये

श्री स्वामिनारायण भगवानने अज्ञानी तथा भोले लोगों को अपना शिष्य बनाये थे । ऐसा कहने वालों को यह खबर नहीं कि गुजरात की छोटी काशी वडोदरा के विद्वान शोभाराम शास्त्री तंबकनाथ शास्त्री, राजवैद्य रामचंद्रजी, हरिचंद्रजी तथा गुजरात में जिनकी प्रतिष्ठा थी ऐसे भरुच जिला के आमोद गांव के प्रकांडपंडित दीनानाथ शास्त्री, लक्ष्मीनाथ, शियाणी के विप्र शिवराम इत्यादि बड़-बड़े विद्वान महाराज के सेवक बने थे । श्री स्वामिनारायण के योग में आये हुये सभी को समाधिप्रकरण में समन्वित करके अपने ऐश्वर्य को दिखाये थे । इतना ही नहीं प्रत्येक धर्म के आश्रितों को अपना अलौकिक चमत्कार दिखाये थे । स्वयं समर्थ महाप्रभु भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने आश्रितों को तो सुखी किया ही था इसके साथ ही अन्यो को भी चमत्कार दिखाकर सुख-शांति प्रदान किये थे ।

### अनेक आकर्षण

चमत्कार तो जादूगर भी दिखाते हैं लेकिन महाप्रभु जो चमत्कार दिखाये थे दिव्य चमत्कार थे अलौकिक थे । किसी के प्रश्न पूछे जाने पर कविवर दलपतरामने एक पंक्ति में ही भगवान स्वामिनारायण का ऐश्वर्य बता दिया -

बल थी, कल थी, धनथी, वश करता नृप होय ।
खेची ले जान लाखना वो तो ईश्वर होय ॥

### प्रशंसा का प्रमाणपत्र

अंत में एक बात कहना यह है कि आश्रितजन जब शरीर का त्याग करते है तब भगवान स्वामिनारायण स्वयं दर्शन देकर अपने धाम में ले जाते हैं । जिस साधु में प्रेम हो उस साधु के रुप में दर्शन देते हैं । ऐसे प्रसंग आज भी अपने संप्रदाय में देखने को मिलता है ।

श्री स्वामिनारायण भगवान स्वयं अपने श्री मुख से अपने आश्रितों की प्रशंसा करते हुये कहते हैं कि - ''मारा जनने अंत काले जरुर मारे आववुं''

विरदु मारुं बदले नहि ए सर्वजनने जणावुं ।

यह दयालुता है अपने महाप्रभु भगवान श्री स्वामिनारायण की जो स्वयं रथ, विमान, पालकी, लेकर अपने आश्रितों को लेने आते हैं । प्रभु का दर्शन होते ही भक्त धन्यता का अनुभव करने लगता है । बाद में भगवान के साथ प्रयाण करता है । अंतकाल में इस दर्शन के लिये आश्रितजन प्रभु के आगमन की राह देखते रहते हैं । इतना ही नहीं, लेकिन इसके लिये जगत की वासना छोड़कर प्रभु की रटन लगजाती है ।

कल्याण करने वाले महाप्रभु का यह अखंड सदाव्रत चलता ही रहेगा यही महाप्रभु की अलौकिक करुणा है ।

# एकादशी

- चन्द्रकान्त मोहनलाल पाठक ( गांधीनगर )

प्रातः काल का समय अलैया खाचर भादर नदी में स्नान कर रहे थे और कुछ खाये जा रहे थे । किसी ने कहा अरे अलैया ! आज बडी एकादशी है क्या खा रहे हो ? आज महा प्रभु जेतपुर पधारे हुये है ? संत मंडल के साथ भादर में स्नान कर रहे हैं।

श्रीहरिने कहा कि, अलैय क्या कह रहे हैं।

महाराज अलोयो नहाते हुये केवल खाने की चिंता करता है। इसका मुख तो देखिये । भगवान का नाम लेने की जगह खाने पर ही मन रहता है। आप के आश्रित कब भूखे रहे हैं ? श्रीहरिने कहा, काठी दरबार सभी ऐसे ही होते हैं । बडे कला बाज होते हैं । महीने में दो एकादशी आती है। इसे भी नहीं करते । एकादशी का बहुत महत्व है। एकादशी व्रत करने से सभी पाप नष्टहो जाता है।

यह वात सुनकर अन्य काठीने कहा, अब पाप रहा कहाँ ? जब से आपका आश्रय ग्रहण किये तब से सभी पाप जल गये । प्रभु अपने मुखारविंद धोते हुये बोले, आप को शास्त्र का ज्ञान नहीं इसलिये ऐसा बोल रहे हैं । शास्त्र की मर्यादा का पालन तो सभी को करना ही चाहिये । एकादशी का व्रत स्वयं भगवान श्रीकृष्ण का व्रत है। वे ही हमारे इष्टदेव है । जो भी स्त्री पुरुष एकादशी व्रत नहीं करता वह रौरव नामक नरक में जाता है । एकादशी के दिन जो अन्न खाता है वह मल खाता है। जो एकादशी व्रत नहीं करता उसका कोई प्रायश्चित नहीं बताया गया है । साठ हजार वर्ष तक एक लाख तपस्वी ब्राह्मण के भोजन का फल मात्र एक एकादशी के व्रत में है । एकादशी दश इन्द्रियों के साथ मन को शुद्ध करने का व्रत है । इस दिन श्रद्धा तथा महिमा के साथ किया गया उपवास तप कहा गया है । इससे भगवान प्रसन्न होते हैं । श्रीहरि जब ऐसा बोले तो जेतपुर के राजा काठी दरबार ने पूछा कि हे महाराज ! एकादशी की इतनी महिमा शास्त्रों में क्यो बताई गयी है?

महाप्रभुने कहा हे दरबार ! आप मुमुक्षु हैं । जिन्हे कल्याण की चाहना हो, श्रद्धा हो, उनके साथ वात करने की इच्छा होती है । आप पूछते हैं तो सुनिये । प्रत्येक व्यक्ति जब भगवान के समीप आना चाहतै है तो भगवान उस पर प्रसन्न होते हैं। भगवन के संबन्धसे उस भक्त की भी महिमा बढने लगती है । एकादशी के ऊपर प्रसन्न होकर भगवान वासुदेवने आशीर्वाद दिया था कि आज के दिन जो श्रद्धा भाव से व्रत-अनुष्ठान करेगा उसके सभी पाप नष्ट होजायेंगे। मनवांच्छित फल प्राप्त करके मोक्ष के अधिकारी होंगे । मेरी दृष्टि शास्त्रों के नियम पालन पर रहती है। एक बात और कहता हू - यह गांव रामानंद स्वामी के चरण रज से पवित्र है । स्वामीने यहीं पर मेरा गादी अभिषेक किया था । मुझे इस गांव में आचार्य पद प्रदान किया था। कितने प्रसंग विशिष्ट होते हैं। आज का प्रसंग भी ऐसा है। विशेष महत्ववाली इस एकादशी को सभी करेंगे । आज मैं सभी के लिये फलहार मंगवाता हूँ। महाराज मयाराम भट्ट को बुलवाये ।

भट्टजी ! आप गाँव में जाइये । बरफी-पेड़ा ले आइये। पचास मन जितना लाना है एक जगह से न मिले तो अगल-बगल के गाँव से व्यवस्था कीजियेगा । साथ में किसी और को लेलीजिये, दूध, दही, केला जो भी फलाहार मिले ले आइये । फलाहार की जो वस्तु आई सभी में बांट दी गयी । श्रीहरिने कहा अभी भी फलाहार बचा हुआ है, जिन्हे जितना खाना हो लेजाइये श्रीहरि की बात सुनकर पर्वतभाईने कहा, ऐसी एकादशी तो हमने कभी नहीं देखी । आज तो अद्भुत उत्सव होगया । सभी खूब प्रसन्न हुये । काठी दरबारों ने कहा महाराज ! हम सभी रजोगुणी होने से रसास्वाद के लोभी होने से जैसा तैसा बोल गये हैं। हमें भी आपको प्रसन्न करना है। आप जैसा कहेंगे हम वैसा ही करेंगे । एकादशी को अब हम कुछ नहीं खायेंगे । लेकिन आप से एक प्रार्थना है कि उस दिन निराहार रहने की शक्ति दीजियेगा । कभी भूल हो जाय तो क्षमा कीजियेगा।

काठियों की वाणी सुनकर श्रीहरि प्रसन्न होकर कहने लगें कि आज हम सभी पूरा दिन बाहर विताये हैं अब गाँव में चलते हैं।

# आनंददायी तथा कल्याणकारी श्रीहरि की प्रसादी की धोती

- गोरधनभाई वी. सीतापरा ( हीरावाडी-बापूनगर )

वणी वणी शुं वर्णवु वणी ओ समानी वात ।
जीव जगतना उपरे, आज अमे छीये रणीयात ।
जाणिये सारवी जगतने, लई जाये अमारे धाम ।
केहेन राखिये कोईने, एम हेवे छे दणी हाम ।
ते सारु भूमि उपरे, कंई राख्या सुखना समाज ।
अमारा अंग संगनी वस्तु, राखी जीवना कल्याण काज।
फरी फरी फेरो पडे, एवुं करवुं नथी आ वार ।
सहुजीव वो सामटो, आज करवो छे उद्धार ।

• • •

वळी कल्याणकारी जे वस्तरे,
ते वण पृथ्वी पर छे समस्तरे ।
बहु ते वडे थाशे कल्याण रे,
स्पर्शि पामसे पद निवारण रे ॥
( पुरुषोत्तमप्रकाश )

श्रीहरि कहते हैं कि इस समय हम जगत के जीवों पर प्रसन्न हैं . मन में ऐसा होता है कि सम्पूर्ण जगत को एक ही साथ अपने धाम में लेजाऊँ । इसी लिये इस भूमि पर बहुत सारे सुख के साधन बनाये हैं । जिस में हमारे शरीर से सम्बन्धित जो भी वस्तु है, वह प्रसादी रुप हैं वह सभी के लिये कल्याण कारक है।इन प्रसादी की वस्तुओं का स्पर्श करने मात्र से जीव मात्र का मोक्ष होगा । शास्त्र प्रमाणानुसार जिस तरह भी हरि का ध्यान किया जाता है ठीक उसी तरह उनकी प्रसादी की वस्तुओं का भी ध्यान करना चाहिये । पूजन करना चाहिये । दर्शन करना चाहिये। श्रीहरि द्वारा स्पर्श की गयी वस्तु निर्गुण होती है तथा दिव्य होती है।

श्रीहरि के छठे वंशज प.पू. बड़े महाराजश्री अहमदाबाद के नारायण पुरा विस्तार में श्रीहरि के प्रसादी की वस्तुओं का जो म्युझियम बना रहे हैं उससे ऐसा लगता है कि अपने दादा इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान का संकल्प यह कि सभी जीव का एक ही साथ उद्धार करना है उसी को साकार कर रहे हैं। जो प्रसादी की वस्तु किसी व्यक्ति के पास हो वह चाहे साधु हो या हरिभक्त हो उसका दर्शन सभी को संभव नहीं है। जब वही वस्तु म्युझियम में आयेगी तो देश-विदेश के लाखों हरिभक्त उसके दर्शन का लाभ लेकर मोक्षभागी बनेंगे। महिमा वाले भक्तों के लिये तो सम्पूर्ण म्युझियम ही ध्यान करने योग्य हो जायेगी। इस लेख के माध्यम से श्रीहरि की धोती का गुणगान लिखते हैं।

बात इस तरह है एक समय श्रीहरि की आज्ञा से गढपुर से जेवजी भगत आम खरीदने के लिये गुजरात में आये थे। गुजरात के जयालवनामक गाँव के बाहर आम का वन था, वहाँ से सात गाड़ी आम खरीदे और गढपुर भेंज दिये । उस समय रामकृष्णानंद मुनि भाल प्रदेश से बैलगाड़ी में गेहूं भरकर श्रीहरि के पास आये । इसलिये श्रीहरि रोटी और आमरस का बड़ा उत्सव किये । श्रीहरि संत, पार्षद तथा आने वाले सभी भक्तों को आम का रस पिलाकर संतृप्त किये। स्वयं आम्रफल खूब खाये। दोपहर में स्नान करके जो धोती पहने थे उसी गीली धोती को

( अनुसंधान नं. १४ पर )

# किस सम्बन्धकी महत्ता

- जयंतीलाल के. सोनी ( मेमनगर-अहमदाबाद )

संबन्धमायिक तथा अमायिक कहाजाता है । मायिक संबंधअर्थात् इस लोक का संबन्ध, जिसे लौकिक संबन्धकहते हैं । जबकि अमायिक संबन्धपरमात्मा के साथ के सम्बन्धको कहते हैं । पारलौकिक सम्बन्धभी इसे कहा जाता है ।

इस लोक के संबन्धमें माता-पिता, पुत्र-पुत्री, भाई-बहन, पौत्र-पौत्री, इत्यादि आते हैं । इन सभी को रक्त का संबन्धकहा जाता है । अन्य संबंधी-पडोशी, मित्रता, व्यापारी-ग्राहक, कर्मचारी-अधिकारी इत्यादि स्वार्थ के होते हैं । स्वार्थ के विना कोई सम्बन्धनहीं रखता । इसलोक केसंम्बन्धमें संतो ने कहा है -

''संस्कारे संबन्धी सर्वे मळया रे, ने छे जूठी माया केरी लाल ।

अंतकाले सगु नहि कोई नुं रे.... स.गु. देवानंद स्वामी ॥''

इस विशाल जगत में अपने कुटुम्ब-परिवार में जो-जो आते हैं अथवा अन्य रीति से संबन्धमें आते हैं वे किस-किस संबन्धसे आते हैं उन्हे आप जानते हैं । लेकिन उपरोक्त संबन्धके नाते समझते हैं या पहचानते हैं । सम्बन्धके नाते एक दूसरे से प्रेम करते हैं। वे अपने हितेच्छु हैं ऐसा मानकर व्यवहार करते हैं । वास्तव में ऐसा नहीं है । इसलोक में जितने संबन्धहै वे पूर्व जन्म के आधार पर चार प्रकार से बताये गये हैं - ( १ ) ऋणानुबन्ध( २ ) वैरानुबंध( ३ ) स्नेहानुबन्ध( ४ ) न्यासानुबन्ध।

**(१) ऋणानुबन्ध** में पिता पुत्र आते हैं जिसमें ऋण लेने देने का संबन्धबताया गया है । ऋण पूरा होते ही पिता या पुत्र की मृत्यु हो जाती है । पूर्व जन्म में कोई ऐसा व्यक्ति किसी से ऋण लिया हो और ऋण चुकता न किया हो तो वह अपने ऋण वसूल करने के लिये पिता, पुत्र या अन्य किसी रुप में आता है । जैसे पुत्र के रुप में आवे तो वह सुंदर, आज्ञाकारी, होशियार होता है, जिससे पुत्र मोह पिता को होता है । पुत्र मोह के कारण पिता रातदिन अथक परिश्रम करके पुत्र के पीछे पैसा खर्च करता है और आनंद का अनुभव करता है । इस तरह पुत्र अपना वकाया ( ऋण ) लेने के लिये परवरिश में पैसा खर्च करवाता है । इसी तरह आकस्मिक विमारी मे पानी की तरह पैसा खर्च करवाकर मृत्यु को प्राप्त होजाता है । ऋण पूरा होते ही कौन किसका पिता और कौन किसका बेटा । माया का इतना गहन पर्दा सभी के ऊपर रहता है कि पहचान पाना बड़ा कठिन है । परंतु ज्ञानी व्यक्ति को इसका ख्याल आजाता है ।

**(२) वैराग्यानुबन्धः** पूर्वजन्म के दुश्मनावट का भोग पूरा करने के लिये जो सम्बन्धहोता है उसे वैराग्यानुबन्धकहते है । कोई अल्प आर्थिक समस्या के कारण पिता की या पुत्र की हत्या कराता है । इसके अलांवा पडोशी या मित्र अथवा अन्य कोई वैर संबन्धपूरा करने के लिये आता है । जिसके संबन्धप्रारंभ से ही कष्टदायक हों फिर भी निभाना पड़ता है । वैर संबन्धपूर्ण होते ही नाता टूट जाता है ।

**(३) स्नेहानुबन्धः** इस सम्बन्धमें पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-बहन, या भाई-भाई में इनता अधिक ममत्व होता है कि एक दूसरे प्राणन्यौछावर कर देते हैं । एक के मृत्यु होने पर दूसरा भी प्राण त्याग देता है ।

**(४) न्यासानुबंधः** इस संबन्धमें एक दूसरे का आत्मीय संबन्धनहीं होता केवल साथ रहने का संबन्धहोता है । परिवार में कुटुम्ब भाव देखने में न आवे । जिस तरह धर्मशाला में रहने वाले मुसाफिर हो समय पूरा होते अलग हो जाते हैं । इसी तरह परिवार में उदासीनता के साथ रहते हुये समय पूरा करके विदा हो लेते हैं ।

उपरोक्त सभी संबन्धमायिक होने से एक दूसरे में दया का भाव स्नेह या स्वार्थ तो रहता ही है । जिससे एक दूसरे में मायिक बंधन अर्थात् वासनिक सम्बन्धउत्पन्न होता है । जिससे अंत अवस्था में प्रभु स्मरण न होने से वासनिक संबन्धो की याद आती रहती है । परिणाम स्वरुप वासना की पूर्ति करने के लिये पुनः जन्म धारण करना पड़ता है । श्रीजी महाराजने वचनामृत में भी यह बात कही है कि शुभ वासना या अशुभ वासना ही जन्म दिलाती है । इसी लिये कहते हैं कि ''प्रभु के बिना अन्य में प्रेम करना पांच प्रकार के पाप से बड़ा पाप कहा गया है । जन्म मरण के चक्कर में एकबार फंसने के बाद उसमें से निकलना बड़ा कठिन है । आत्मा का कल्याण तो प्रभु के सम्बन्धसे ही होता है । शास्त्रो में भरतजी का आख्यान बहुत चमत्कारिक कहा गया है । भरत जी चक्रवर्ती राजा थे । सम्पूर्ण पृथ्वी का राज्य था । परंतु सम्पूर्ण राज्य त्याग कर गंडकी नदी के किनारे जाकर तप करने लगे थे । संयोगवश वहाँ भी एक मृग शावक में

( अनुसंधान नं. १२ पर )

# सत्संग सुरभि

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला ( न्युजर्सी-अमेरिका )

### यह माणकी मेरी बहन है

देवरिया गाँव के दरबार जालिमसिंह के दरवाजे पर तीन घुड़ सवार तथा एक बैलगाड़ी आकर खड़ी है, ऐसा समाचार सेवक ने दिया। यह सुनकर दरबार की माताजी मस्तक पर साड़ी रखकर बाहर देखने आयी, देखा तो स्वयं भगवान स्वामिनारायण आये हुये हैं।

पधारो महाराज, पधारो ! आज एकाएक कृपा हुई है। हाँ, अहमदाबाद जा रहे थे मार्ग में देवलिया गाँव आया तो मिलने की इच्छा हो गयी।

जालिमसिंह तथा केशाबा सभी का स्वागत कीं। महाराज को सोने की पलंग पर बैठाये। समाचार पूछे। आना था तो थोड़ा पहले सूचना दिये होते तो स्वागत उत्सव की व्यवस्था किये होते ! केशाबा हाथ जोड़कर कहने लगी।

विना बताये अतिथी आवे तो उसका महत्व अधिक होता है। महाराज मंद मुस्कान के साथ कहे।

भक्ति की पराकाष्ठा के कारण केशाबा के घर स्वयं अचानक महाराज पधारे हैं। यह जानकर बा के हृदय में आनंद की लहर उठ रही थी। करीब १० वर्ष से ठाकुरजी को जब भोग लगावें थोड़ा उस में कम दिखाई दे तब उस प्रसाद को ग्रहण करती थी। यह उनकी दैनिक स्थिति हो गयी थी।

महाराज का स्वागत करके पाद्य, अर्घ्य, नैवेद्य इत्यादि के बाद घोड़ो को अश्वशाला में बंधवाकर घास इत्यादि को डलवाया। साथ आये हुये सेवकों के लिये रसोई की तैयारी होने लगी। भोजन तैयार होने के बाद महाराज को सोने के पात्रो में भोजन कराकर अन्य सभी की पंक्ति लगाई गयी। सम्पूर्ण दिन महाराज उनके घर में रहे। सायंकाल सत्संग सभा किये। अगल-बगल के भक्त भी आये। महाराज का दर्शन करके सभी आनंद का अनुभव करने लगे। रात्रि निवास के बाद प्रातः महाराज केशाबा से चलने को कहते हैं। सुनते ही केशाबा ने कहा अरे महाराज ! कल ही तो आप आये हैं आज जाने को कहते हैं। जल्दी क्या है ?

जिस तरह राधा-कृष्ण से विनयपूर्वक मना रही थी ठीक वही स्थिति यहाँ थी। महाराज प्रात-अहमदाबाद निकलने वाले थे और केशाबा की इच्छा थी कि आज मेरे हाथ का हलुआ पूडी खाके जांय।

---

पेज नं. ११ से आगे

## किस सम्बन्धकी महत्ता

स्नेह होने से अन्तिम अवस्था में प्रभु के स्मरण की जगह उस मृग शावक का स्मरण होने लगा जिससे उनको मृग योनि में जाना पड़ा था। इस तरह देव दुर्लभ देह को प्राप्त करके मनुष्य शरीर को गुमाना पड़ा जिससे पशुयोनि में जन्म लेना पड़ा था। इसलिये वचनामृत में श्रीहरि हमें वारंवार सचेत किये हैं कि देह तथा देह के सम्बन्धी का प्रेम तो पंचविषय के बंधन से भी अधिक बंधन कारक है। प्रभु परायण जीवन में मायिक संबन्धका प्रवेश सरलता से होना संभव नहीं है। इसके बिना तो कितना भी बुद्धिमान पुरुष हो मायिक संबन्धसे नही छूट सकता। संसार व्यवहार में रहते हुये सच्चे संत में प्रेम रखना चाहिये। संप्रदाय के शास्त्र शिक्षापत्री, वचनामृत, सत्संगिजीवन, सत्संगि भूषण, भक्त चिंतामणी, नन्द संतो की बातों की पुस्तक का यदि सतत चिन्तन, पठन, मनन किया जाय तो संत समागम की पूर्ति होती रहेगी। ये सभी शास्त्र प्रभु में गाढ प्रेम कराने वाले हैं। अनंत जन्मों से प्रत्येक योनि में परिवार की वासना के कारण जन्म धारण किये हैं। यह यदि समझ में न आवे तो पता नहीं कितने और जन्म लेने पड़ेंगे। श्रीजी महाराज वचनामृत में कहते हैं कि "समुद्र में जितना पानी है उतना माता का दूधपीये हैं।" अब संसार सागर को पार करने के लिये संसार के सभी संबन्धो को त्याग कर श्रीहरि की भजन-भक्ति करनी चाहिये। संतो ने गाया है - "रे सगपण हरिवरनुं साचु, बीजुं सर्वे क्षणभंगुर काचुं"। ऐसे क्षण भंगुर संबन्धो का विचार करके आज से ही इस शरीर में जब तक प्राण है प्रभु भक्ति करके महाराज को प्रसन्न करने में ही इस शरीर की सार्थकता है।

# सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

## दादा दुःखी क्यों ?

- शा. हरिप्रियदासजी ( गांधीनगर )

एक परिवार के मुखिया बहुत दुःखी थे । घर की बहुयें कई घर से आनेवाली होती हैं, इसलिये सभी का स्वभाव एक जैसा होना संभव नहीं है । कोई प्रेम से भोजन परसती थी तो कोई अन्यमनस्क । कभी रोटी कड़क बनाती तो वे श्वसुरजी के लिये तकलीफ होती, उनके दांत नहीं थे । कड़क रोटी होने पर चबाना कठिन हो जाता था । घर में वे अकेले वृद्धा वस्था का अनुभव करते और बहुओं के हाथ में जीवन था ।

किसी साधु पुरुष को यह पता चला कि वृद्ध दुःखी हैं । साधु का हृदय बड़ा कोमल होता है । संतो को इस वृद्ध की दशा देखकर दया आ गयी । चलो हमारे आश्रम में रहो । सभा मंडप में बैठकर माला फेरना । समय समय से भगवान का प्रसाद मिलता रहेगा । वृद्धदेवता आश्रम में आये उन्हें आनंद आने लगा । वहाँ वह कड़ी रोटी का दर्शन बन्द हो गया । मुलायम रोटी मिलने लगी । मुंख में डालते ही गलजाती थी । चबाने की जरुरत भी नहीं पड़ती थी, अब वे स्वस्थ हो गये । आठ ही दिन बीता होगा कि वे स्वामीजी के पास आकर कहे कि स्वामीजी ? हम घर जांये । स्वामीने कहा अरे भाई फिर उसी घर का नाम ले रहे हो जहाँ तुम्हे इतनी पीड़ा थी रोटी गले के नीचे नहीं उतरती थी, बहुओं का अपमान मिलता था । यहाँ आपको क्या तकलीफ है ? स्वामीजी ! यहाँ कोई तकलीफ नहीं है । तो भजन कीजिये इस आश्रम में रहकर । खा-पीकर मस्त रहिये । स्वामीजी एक वात कहूँ मेरे घर में पौत्र ( बेटो के बेटे ) सभी दादा, दादा कहते हैं उसी की याद आ रही है । यहाँ कोई दादा नहीं कहता है इसलिये सब कुछ सूना सूना लग रहा है । संतो ने छोटे छोटे बालकों की व्यवस्था कर दी और उन बच्चो से कहे कि तुम लोग सभा मंडप से जब निकलना तो वृद्ध देवता को दादा जय स्वामिनारायण कह कर जाना । ऐसा ही हुआ सभी लड़के उन्हे दादा जय स्वामिनारायण, दादा जय स्वामिनारायण कहने लगे । फिर भी उनका मन घर की तरफ रहा और स्वामीजी से घर जाने की बात करने लगे । स्वामीने कहा अब तो आश्रम में भी आपको दादा कहने वाले अनेकों बालक हो गये फिर क्यों घर जाने की बात करते हो । वृद्ध देवता ने कहा, स्वामीजी सब ठीक है, यहां सभी बच्चे दादा तो कहते हैं लेकिन जो घर के बच्चों में प्यार मिलता है वह यहाँ के बच्चों में नहीं मिलता । ऐसा कहकर वे घर के रास्ते पर चलदिये ।

मित्रों ! इसीलिये शास्त्र, संत सभी समझाते हैं कि जब वृद्धावस्था आवे तो अनाशक्त बनो । समझ बुझकर सबकुछ छोड़ने की प्रेक्टीस करो । अन्यथा निष्कुलानंद स्वामी कहते हैं कि "समझी मूको तो सारुं घणुं जरुर मुकावशे जमजी ।" परमात्मा का सच्चा सुख जिसे चाहिये उसे अवश्य इस विषय पर विचार करना चाहिये । बड़ी कृपा करके भगवान ने अमूल्य यह शरीर दी है इसलिये जगत के रसास्वाद का परित्याग करके भजन भक्ति द्वारा आत्मश्रेय करलेना चाहिये ।

•

## सियार के दुःख का कारण

- साधु श्रीरंगदास ( गांधीनगर )

एक विशाल जंगल था जिसमें महा भयंकर जानवर रहा करते थे । जिस में कोई मनुष्य प्रवेश नहीं कर सकता था। फिर भी अपने इष्ट देव महाप्रभु भगवान श्री स्वामिनारायण नीलकंठ वर्णी के रुप में इन्हीं भयंकर वनों में तप करते थे । जिस जंगल में विषैले सांप बिच्छू, हिंसक जानवर - हाथी, चिता, सिंह, रीच्छ, इत्यादि प्राणी देखने को मिलते हैं । लेकिन इन प्राणियों से भी कुछ बोधतो मिलता ही है ।

ए सभी प्राणी अपने अपने ढंग से जंगल में रहते है, खाते पीते हैं । इनमें से एक दिन ऐसा हुआ कि प्रातः काल का समय सूर्य धीरे धीरे ऊपर उठने लगा । सभी पशु-पक्षी अपने अपने चारा की शोधमें निकल पड़े । उस में से एक

सियार भी अपने आहार की तलाश में निकला । उसकी नजर अपनी परछांयी पर पड़ी । देखकर मन में हुआ कि मैं तो बहुत बड़ा हूँ । एक छलांग मारुं तो इस पहाण को पार कर सकता हूँ । कोई भी सामने आवे तो उसे गिरा सकता हूँ । मैं बड़ा शक्ति साली हूँ । मेरी लम्बाई तो बहुत विशाल है । अपने मन में अपनी ही प्रशंसा का पुल बांधकर घूमने लगा ।

उसी समय एक विशाल हाथी वहाँ से निकला । हाथी को देखकर सियार के मन में हुआ कि मैं भी कोई ऐसा तैसा नहीं हूँ । चाहूँ तो इस हाथी को एक मिनट में मार सकता हूँ ऐसा विचार कर उस हाथी के रास्ते में जाकर खड़ा हो गया। हाथी रास्ता छोड़कर दूसरे रास्ते से चला गया । पुनः वह सियार आगे आया । वह हाथी विचार करने लगा कि यह बार-बार क्यों रास्ते में आ रहा है । मेरे पैर के नीचे आजायेगा तो मर जायेगा, इसलिये सूंड़ से उठाकर दूर फेंक दिया । सियार की हड्डी-पसली टूट गयी । उठ भी नहीं सका । बाद में उसने अपनी परछायी देखा तो गायब थी । दोपहर का समय हो गया था । जिससे उसकी पर छापी बहुत छोटी दिखाई दी, अब उसे यथार्थ का ज्ञान होगया कि मैं कितने पानी मे हूँ ।

इस कहानी से यह समझने लायक है कि अपनी शक्ति के विचार किये बिना बड़ी-बड़ी अपेक्षा रखना दुःख का कारण हो सकता है । इसी लिये तो अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री में लिखा है कि अपनी शक्ति की मर्यादा में ही कार्य करना चाहिये । अपेक्षा को पूर्ण करने के लिये शक्ति से अधिक खर्च करे, बलवान के साथ युद्ध करे, कोई भी अविचार करके काम करे तो उसकी स्थिति सियार जैसी होगी ।

---

पेज नं. १० से आगे

## आनंददायी तथा कल्याणकारी श्रीहरि की प्रसादी की धोती

ओढकर बैठ गये । महाराज के दर्शनार्थ आये हुये देवजी भगत श्रीहरि से बोले कि हे प्रभु ! आप को जिस पुष्यात्मा ने यह धोती दान की है वह बड़ा भाग्य साली है । वहइसलिये कि इसे आप धारण किये थे । बाद में इसी से शरीर पोंछे, उसके बाद उत्तरीयवस्त्र की तरह इसी को धारण करके सभा में विराजमान है । उस भक्त से आप कितना प्रेम करते हैं । रात दिन इसी को ही धारण करते है, उस पुण्यात्मा का पुण्याचरण क्या है ? यह सुनकर भगवानने कहा हे भक्त ! आप इस धोती के महत्व को अच्छी तरह समझे हैं । इसलिये अब आपको इस प्रसादी की वस्तु देता हूँ । ऐसा कहकर वह धोती देवजी भगत को दे दिये । इस धोती का माहात्म्य प्रगट करने वाले दो श्लोक को ब्रह्मानंद स्वामीने सायंकालीन सभा में महाराज को सुनाया ।

जिसका भाव इस तरह है - तुझे श्रीहरिने धारण किया तूं भगवान के काम में आई है । इसलिये तूं धन्य है । सूत कातने वाला धन्य है । धोती बूनने वाला धन्य है । रंगीन कलर करने वाला धन्य है । जिस परमात्मा में अगणित ब्रह्मांड है उस हरि को भी चार हाथ की धोती आच्छादित की है । जिसे देखकर नर-नारी सभी आनंदित होते हैं । इसलिये हे धोती तूं धन्य है । तुम्हारी महिमा हम कहने में समर्थ नहीं हैं ।

सत्संगि भूषण ग्रंथ में व्यापकेश मुनि, ज्येष्ठजित राजा को कहते हैं हे राजन् ! इस तरह ब्रह्ममुनिने उस धोती का माहात्म्यगान किया । जिसे सुनकर महाराज बहुत प्रसन्न हुये। प्रसन्न होकर ब्रह्ममुनि के गले में अपने गले की माला निकाल कर डाल दिये । जो इस चरित्र का प्रतिदिन गान करेगा वह श्रीहरि के धाम में जायेगा ।

हम भी महाप्रभु को प्रार्थना करें कि हे प्रभु ! आपकी प्रेरणा से इस लेख को देवजी भगत के वंशज वांचे, मनन करें और उनके मन में यह भाव आजाय कि म्युझियम में यह प्रसादी की वस्तु देने योग्य है, क्योंकि यहाँ उसके दर्शन से अनेकों जीवों का कल्याण संभव है । यहाँ वे देवजी भगत के वंशज उस प्रसादी की वस्तु देगें तो उनका भी कल्याण होगा । सं. २०४७ फाल्गुन शुक्ल-३ को उद्घाटन के समय इस तरह पता नहीं कितनी प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन होगा समय वीतजाने पर वह पुनः वापस नही आता । आज तक जो लोग म्युझियम में तन, मन, धन की सेवा नहीं किये हैं वे सरोवर में एक बूंद जल की तरह अपनी सेवा अवश्य लिखवायें । जिससे दर्शन करते समय अपनी म्युझियम की भावना जागे । धनवान व्यक्ति भले लाखो, करोड़ो अर्पण करे परंतु गरीब व्यक्ति भी भाव से १००-०० रुपये भी दान भेंट करेंगे तो उसे श्रीहरि लाख, करोड़ मानकर स्वीकार करेंगे । जिस तरह मंदिर का माहात्म्य होता है ठीक वही महत्व म्युझियम का है ।

# भक्तिसुधा

## धर्म की महिमा

सां.यो. कुंदनबा गुरु कंचनबा (मेडा)

हे प्रिय भक्तों ! धर्म रहित कर्म करने से यदि कोई विशेष लाभ होता हो तो मेरे आश्रित उस कर्म को न करें । जैसे गटर का पानी कोई पीता नहीं है या स्नान नहीं करता उसका परित्याग करदेता हैं । इसी तरह धर्म के विना किये जाने वाले कर्म से विशेष लाभ होने पर भी उसका त्याग करना चाहिये । जब शरीर का नाश होता है उस समय धन-सम्पत्ति सब यहीं रहजाता है । परंतु धर्म किया हो तो वही परलोक जीव के साथ जाता है । इसलिये सभी आश्रितों को चाहिये की स्त्री संग की इच्छा से या धन की इच्छा से या अन्य किसी पदार्थ की इच्छा से धर्म का परित्याग नही करना चाहिये । धर्मपालन करने में कदाचित् भिक्षा मांगने का अवसर आजाय तो भीख मांग कर स्वयं को धनवान् मानलेना श्रेयष्कर है लेकिन धर्म का त्याग नहीं करना चाहिये । धर्म ही सच्चा धन है । हे भक्तों ! इस संसार में सभी मनुष्य अनादिकाल से सुख-शांति तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिये विविधउपाय करते रहते हैं । लेकिन यह सभी क्षणिक है । लेकिन आध्यात्मिक तत्व चिन्तक लोग सांसार की असारता को जानकर संसार से आसक्ति छोड़कर शास्वत सुख की प्राप्ति की तरफ गति करते हैं ।

शिक्षापत्री में भी भगवान श्री स्वामिनारायणने लिखा है कि श्रीकृष्ण भगवान की भक्ति धर्म के विना नहीं करनी चाहिये । जो धर्म का त्याग नहीं करते उन्हें परमात्मा कभी नहीं छोड़ते । इस शरीर रुपी वृक्ष का मूल धर्म है । विवेक फूल है । शमदमादिक उसके पत्ते हैं । भक्ति उसकी छाया है । मुक्ति उसका फल है । इसलिये धर्मरुपी मूल रहेगा तोही मोक्षरुपी फल मिलेगा ।

श्रीजी महाराज गढडा के मध्यम प्रकरण के वचनामृत में कहते हैं कि भगवानन्नी मूर्तिनो आश्रय होय ने जो भगवान ना चरित्रो ने गातो सांभणतो होय ने भगवाननुं नाम स्मरण करतो होय ने जो तेमां धर्म न होय तो ते माथे प्रणोलाईने समुद्र ने तरवा इच्छें एवो जाणवो ने तेने चांडाल जेवो जाणवो । जो लोग ज्ञान के अभिमान में धर्म का परित्याग करते हैं उनका पतन होता है । धर्म विना की भक्ति परमात्मा को अच्छी नहीं लगती । बकरी के गले में लटकते स्तन की तरह उनकी भक्ति कही जायेगी ।

हे भक्तों ! क्षमा, दया, अनुसूया, शौच, निःस्पृहयता इत्यादि सभीको धर्म माना गया है । तप, पवित्रता, दया, सत्य ये धर्म के चारचरण है । भक्ति चिन्तामणी में निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है -

धर्म अने अमने बहु वहालो, एम कहे छे धर्म नो लालो ।
धर्म वालाना साथे हेत मारे, एक कहे वालो वारे वारे ।
धर्मवाला आये अनाजल, बहु स्वादु लागे ए समकल ।
धर्मवाननुं फल धन फूल, जेथिये ते जाणु अमूल ।

## संत-स्वयं श्रीहरि

- सां.यो. मोंधीबा (धोली-मूलीदेश)

हे प्रिय भक्तों ! भगवान श्री स्वामिनारायणने कहा है कि मैं सच्चे संत में रहता हूँ । सच्चा संत कौन है ? जो धन को धूल के समान माने, स्त्री को माता के समान माने, पंचवर्तमान का पालन करता हो वही सच्चा संत है ।

धन्य धन्य ते संत सुजान ने
जेनु उलटी पलचयु आप संत ते स्वयं हरि ।

भक्ति तथा ज्ञान का अवलम्बन करके स्त्री, धन तथा रसास्वाद को जो करता हो उसका संग नहीं करना चाहिये । उसके मुख से कथा भी नहीं सुननी चाहिये । सच्चे संत में हम साक्षात् रहते हैं । अनेक जीवों का हमें कल्याण सच्चे संतो द्वारा कराना है ।

धर्म, ज्ञान तथा वैराग्य के साथ मेरी भक्ति करने वाला जो भी संत हो उन्हीं में मैं साक्षात् रहता हूं । उनके साथ

रहकर वात करता हूं। उनके नेत्र से मैं देखता हूँ उनके कान से सुनता हूँ। ऐसे संत के साथ मैं जाता हूँ। सच्चे संत को दुःख होता है तो मुझे भी दुःख होता है।

"धर्म भक्ति वैराग्यने ज्ञान जे,"

तेने रहेवानुं संत छे ठाम संत ने स्वयं हरि।

हे प्यारी बहनों ! इन धर्मकुल के आश्रित तथा उन्हीं की आज्ञा में रहने वाले संतो में भगवान का वास है। ऐसे संतो की सत्संगति करने से परम एकांतिक भक्ति प्राप्त होती है।

•

### सुखसागर को छोड़कर सुख नहीं मिलता

- सां.यो. कमलाबहन गुरु सां.यो. जयश्रीबहन

श्रीजी महाराज एकवार गढपुर से वडताल मंदिर का काम चल रहा था जिसे देखने जा रहे थे। बीच में रात हो गयी तो वे पीलाव गाँव में रुक गये। सुबह होते ही जब चलने को तैयार हुये उसी समय मनोरमभाई पाटीदारने कहा महाराज काठी दरबारों के साथ छाछ पीकर जाइये न, महाराज ने कहा नहीं हमे तो वडताल ही भोजन करना है। उस समय काठी दरबारों को हुआ कि वडताल पहुंचने में विलम्ब होगा, महाराज को आगे जाने देते हैं और हम सभी पीछे से छाछ पीकर निकलते हैं। सभी पाटीदार के यहाँ छाछ पीने गये। पाटीदार ने तीन-चारदिन की वासी छाछ पिलाया और चना की रोटी आधी-आधी दिया। रोटी को काटकर ज्योंहि छाछ का एक घूंट लिया कि माथे में झटका लगा और रोटी कुत्ते को खिलाकर वहाँ से चल दिये। वडताल पहुंचे तो देखा कि महाराज सभा में विराजमान है। वे सभी काठी दरबार महाराज को प्रणाम करके सभा में बैठ गये। महाराज ने ब्रह्मानंद स्वामी से कहा कि इन दरबारों को भोजन के लिये जल्दी मत कीजियेगा ये लोग छाछ पीकर तथा रोटी खाकर आ रहे हैं। छाछ पीने के लिये अवश्य रुक गये लेकिन वह पटेल तो चार दिन की वासी छाछ तथा चना की आधी रोटी खिलाया। छाछ पीते ही रुंगटे खड़े हो गये। रोटी कुत्ते को डाल दिये। यहां आये तो ब्रह्मानंद स्वामी को रोटी खिलाने के लिये मना कर रहे हैं। उस छाछ के पीने से हम सभी के बाल झण गये इसलिये हम सभी एक दूसरे के माथे को देख रहे हैं।

यह सुनकर महाराज हंसने लगे। महाराजने सभी को तत्काल भोजन के लिये कहा। ब्रह्मानंद स्वामीने सभी से कहा कि जो भगवान को छोड़कर भोजन करता है उसकी यही हालत होती है। प्रेमानंद स्वामी अपनी गीत में कहते हैं कि "व्हाला ये रसना चाहणहार के छाछ ते नव पीवे रे लोल" ऐसा कहकर जगत के सुख को खट्टी छाछ की उपमा दिये हैं। ऐसा कहकर सभी को आनंदित किये और महाराज सभी को साथ लेकर भोजन के लिये गये।

•

### कुंडल की राईबाई

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला (न्युजर्सी-अमेरिका)

कुंडल गाँव की राईबा श्रीजी महाराज में बहुत स्नेह रखती थी। महाराज की सभी लीला का दर्शन वे प्रत्यक्ष देखती थी। रात दिन अन्तर में श्रीहरि का स्मरण रहता था। उनके दो बेटे थे - मामैयो पटगर एवं हाथियो पटगर देह के सम्बन्धी बेटों की अपेक्षा वे महाराज की बात को विशेष महत्व देती थी।

एक दिन श्रीजी महाराज सभी काठी दरबारो से कहे कि आप सभी लूटपाट करने जाइयेगा लेकिन आत्मानंद स्वामी के गाँव आंसोदर में नहीं जाइयेगा वहाँ आपलोग जीत नहीं पायेगे। फिर भी वे सभी महाराज की आज्ञा का उल्लंघन करके आंसोदर गाँव पर आक्रमण किये वहाँ सभी को मात खाना पड़ा साथ में राईबा का बेटा हाथियों पटगर मारा गया।

श्रीजी महाराज राईबा को दर्शन देकर समाचार दिये कि आपका बेटा हाथियों मारा गया है, उसे हम धाममें पहुंचा दिये हैं। उसकी घोड़ी कल सुबह में आपके पास पहुंच जायेगी। प्रातः होते ही वह घोड़ी दरवाजे पर आकर खड़ी हो गयी। राईबा उठकर उसका स्वागत की और कहने लगीं कि तूं अपने हाथियों को अक्षरधाम भेंजकर आयी हो न ? राईबा के भाई मांचाखाचर मृत्यु का स्मण करके रो रहे

थे उस समय राईबा उन्हें सान्त्वना देते हुए कहती है कि भाई क्यों रो रहे हो ? हाथियो तो भगवान के धाम में गया है।

श्रीजी महाराज भादरे से पत्र लिखे कि जो हरिभक्त हैं वे सभी भगवा वस्त्र धारण करके काशीकी यात्रा में जायेंगे । सभी के साथ मामैयो पटगर भी था । सभी मिलकर जेतलपुर गये वहाँ रामदास भाई को मिले । रामदासभाईने कहा आप सभी भुज जाओ । भुज जाते समय मामैयो पटगर घर लौटकर आया और गाँव के बाहर से संदेशा भेंजा कि मेरी मां से कह दो कि तुम्हारा मामैयो आया है।

राईबा तुरंत संदेश भेजवाई की वह महाराज की आज्ञा लेकर आया है कि विना आज्ञा के आया है ? यदि आज्ञा लेकर आया होगा तो ही उसे यहाँ प्रवेश मिलेगा, अन्यथा वह यहाँ नहीं आवे। ऐसी माता की आज्ञा सुनकर मामैयो छ महीना तक तुरखा गाँव में छिपकर रहा बाद में महाराजने राईबा को समझाया तो वे उसे कुंडल आने की आज्ञा दी।

श्रीहरि कारियाणी से संतो के साथ कुंडल आये यह सुनकर राईबा संतो के साथ महाराज को बुलाने गयीं । लेकिन संतो को महाराज षडरस त्याग की आज्ञा किये थे। सभी की शरीर कृश काय हो गयी थी। राईबा बहुत दुःखी हुई । महाराज से कहने लगीं हे महाराज ! यह नियम तो अच्छा नहीं है, यदि नियम देना हो तो ध्यान तथा नाम स्मरण का दीजिये। आप संतो को भी खिलाइये तो इन्द्र वरसात करेंगे । राईबा की यह बात सुनकर महाराज मुक्तानंद स्वामी से कहे कि आज से आप सभी षडरस का त्याग करके घृतमिश्रित आहार ग्रहण करो।

इसके बाद सभी संत महाराज की आज्ञा प्राप्त करके भोजन ग्रहण किये, इसके बाद वरसात प्रारंभ हो गया । संतो को भोजन करते देखकर मानो मेघ भी आनंद में आगया हो।

•

### हमारी वाणी ही मेरा स्वरुप है

- चंद्रिकाबहन कनुभाई भावसार (नवावाडज)

प्रभु की वाणी मोती की तरह अनमोल है । उन्ही की अपररुपा शरीर ही शिक्षापत्री है। सत्संगी संत या गृहस्थ को जो आनंद प्राप्त करावे वह सहजानंद स्वामी । इस नाम में सार्थकता छिपी हुई है। शिक्षापत्री मानो बिन्दु में सिन्धु हो मानो गागर में सागर हो।

आज से करीब दो सौ वर्ष पूर्व लिखी गयी यह शिक्षापत्री अमूल्य पत्रिका है। जगत के इतिहास में इसके समान कोई ग्रन्थ नही है कारण यह कि स्वयं भगवान अपने हाथों से लिखे है। वर्तमान में इस घोर कलिकाल में सत्संगी मात्र के लिये यह शिक्षापत्री दीपक के समान है। प्रारंभ में ही भगवान ने उल्लेख किया है कि ''आत्मघात नहीं करना चाहिये, क्रोधनहीं करनी चाहिये । वर्तमान परिस्थिति में प्रतिदिन समाचार पत्र में आत्महत्या का समाचार तो होता ही है । आज की यह दुर्दान्त घटना को कोई रोक नही सकता। यह कलियुग का प्रभाव नहीं है तो क्या है ? पिता के कन्धे पर पुत्र की अर्थी उठती है, अन्य स्थिति में कही प्रेमी प्रेमिका के विषय में आत्महत्या । इत्यादि सभी को रोकने का एक मात्र साधन है शिक्षापत्री । इसका प्रतिदिन पठन चिन्तन, श्रवण करने से व्यक्ति में आत्मविश्वास जगता है और वह विवेक बुद्धि से आत्मसंयम रखने लगता है।''

इसलिये भगवान स्वामिनारायण ने गृहस्थ के सांसारिक जीवन को सुखमय, प्रभुमय बनाने के लिये शिक्षापत्री में लिखा है जिसका अनुकरण करने से आत्महत्या की आवश्यकता ही नहीं होगी। यह आग्रह भी रहा है कि मनुष्य को मनवांछित फल देने वाली इस शिक्षापत्री का पाठ सभी लोग करें, जिन्हे पढने नहीं आता वे शिक्षापत्री की पूजा करें । आज भी महाराज इस शिक्षापत्री के रुप में स्वयं विराजमान है । इसलिये शिक्षापत्री का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, यह सम्प्रदाय की अमूल्य धरोहर है। इसी की आज्ञा में सभी को रहना चाहिये।

# सत्संग समाचार

## अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में अधिक वैशाख मास का भव्य उत्सव

श्रीपुर में सुशोभित श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव के अलौकिक सांनिध्य में तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से तथा कोठारी दिगम्बर भगत के मार्गदर्शन मे को. जे.के. स्वामी, बलदेव स्वामी, सूर्यप्रकाश स्वामी, योगी स्वामी, साधु मुनि स्वामी, शा. दिव्यप्रकाशदासजी तथा उत्साही श्रद्धालु हरिभक्तों के सहयोग से सम्पूर्ण वैशाख शुक्ल पक्ष-१ ता. १५-४-२०१० से अधिक वैशाख कृष्ण पक्ष अमावास्या ता. १४-५-२०१० तक वर्ष में आनेवाले सभी उत्सवों को तद्‌रुप में प्रदर्शित किया गया था। जिस में समूह महापूजा का भी आयोजन किया गया था। अहमदाबाद शहर तथा गाँवो के हरिभक्त इस दिव्य दर्शन का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किये थे। अधोनिर्दिष्ट उत्सव मनाये गये जिसके यजमान पद का लाभ लेने वाले हरिभक्त धन्य भागी बने।

अधिक वैशाख शुक्ल-१ गुरुवार ता. १४-४-१० को ग्वालबाल दर्शन यजमान : श्री राजेशभाई मनसुखभाई पीठवा

अधिक वैशाख शुक्ल-२ शुक्रवार ता. १५-४-१० को पदयात्रा यजमान : जयेन्द्र शांतिलाल ठक्कर

अधिक वैशाख शुक्ल-३ शनिवार ता. १६-४-१० श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव यजमान : श्रीमती जशुबा जयेशभाई ब्रह्मभट्ट, सह यजमान : श्री दीपकभाई नगीनदास पटेल (कुंडालवाला)

अधिक वैशाख शुक्ल-४ रविवार ता. १८-४-१० को गणेश चतुर्थी यजमान : श्री दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल (ट्रस्टी)

अधिक वैशाख शुक्ल-५ सोमवार ता. १९-४-१० को वसंत पंचमी यजमान : श्री गोविंदभाई पटेल (मोखासणवाला)

अधिक वैशाख शुक्ल-६ मंगलवार ता. २०-४-१० को कुंजगली यजमान : श्री नरनारायणदेव उत्सव मंडल (भरतभाई चौकसी)

अधिक वैशाख शुक्ल-७ बुधवार ता. २१-४-१० को शाकोत्सव

अधिक वैशाख शुक्ल-८ गुरुवार ता. २२-४-१० को राधाष्टमी यजमान : श्री विहुभा रायसिंहजी सिसोदिया, श्री ईश्वरभाई मोहनभाई पटेल।

अधिक वैशाख शुक्ल-९ शुक्रवार ता. २३-४-१० रामनवमी तथा बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का पाटोत्सव, यजमान : श्रीमती हंसाबेन पी. खरसाणी (ह. प्रभुलभाई पी. खरसाणी तथा तन्मय खरसाणी)

अधिक वैशाख शुक्ल-१०/११ शनिवार ता. २४-४-१० को विजयादशमी/तुलसी विवाह यजमान : श्री जयेन्द्रभाई ठक्कर

अधिक वैशाख शुक्ल-१२ रविवार ता. २५-४-१० को वामन द्वादशी, श्री रंगमहोल श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव, यजमान : श्रीमती काशीबहन मगनलाल पाटडीया, हवेली के घनश्याम महाराज का पाटोत्सव, यजमान : श्रीमती शारदाबहन विनोदभाई

अधिक वैशाख शुक्ल-१३ सोमवार ता. २६-४-१० को शिवरात्रि शिवपूजन, यजमान : श्री कांतिभाई गोविंदभाई

अधिक वैशाख शुक्ल-१४ मंगलवार ता. २७-४-१० को नृसिंह जयंती, यजमान : श्री अमृतभाई मोतीजी चौधरी

अधिक वैशाख शुक्ल-१५ बुधवार ता. २८-४-१० को श्री हनुमान जयंती, यजमान : श्रीमती सीताबहन भोलाभाई पटेल

अधिक वैशाख कृष्ण-१ गुरुवार ता. २९-४-१० को श्री नरनारायणदेवों का उत्सव, यजमान : श्री एक हरिभक्त प्रेरक ब्र. राजु स्वामी, बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के यजमान : श्री राज कृष्णकान्तभाई पटेल

अधिक वैशाख कृष्ण-२ शुक्रवार ता. ३०-४-१० को हिंडोला दर्शन यजमान : एक हरिभक्त (प्रेरक कोठारी जे.के. स्वामी

अधिक वैशाख कृष्ण-३ शनिवार ता. १-५-१० को

हिंडोला चाकलेट का, यजमान : एक हरिभक्त ( प्रेरक कोठारी जे.के. स्वामी

अधिक वैशाख कृष्ण-४ रविवार ता. २-५-१० को हिंडोला फूलो का, यजमान : एक हरिभक्त ( प्रेरक कोठारी जे.के. स्वामी

अधिक वैशाख कृष्ण-५ सोमवार ता. ३-५-१० को हिंडोला ड्रायफ्रुट का, यजमान : एक हरिभक्त ( प्रेरक कोठारी जे.के. स्वामी

अधिक वैशाख कृष्ण-६ मंगलवार ता. ४-५-१० को छपैयाधाम दर्शन, यजमान : श्री प्रबोधछगनलाल झाला

अधिक वैशाख कृष्ण-७ बुधवार ता. ५-५-१० को वनविचरण दर्शन

अधिक वैशाख कृष्ण-८ गुरुवार ता. ६-५-१० को जन्माष्टमी, यजमान : श्रीमती कुमुदबहन कांतिलाल दाणी

अधिक वैशाख कृष्ण-९ शुक्रवार ता. ७-५-१० को नन्द महोत्सव यजमान, श्री विपुलभाई सवजीभाई पटेल

अधिक वैशाख कृष्ण-१० शनिवार ता. ८-५-१० को हिमालय दर्शन

अधिक वैशाख कृष्ण-११ रविवार ता. ९-५-१० को समूह महापूजा, हिमालय दर्शन, यजमान : श्री कौशिकभाई व्रजलाल पाटीया

अधिक वैशाख कृष्ण-१२ सोमवार ता. १०-५-१० को हिमालय दर्शन

अधिक वैशाख कृष्ण-१२ मंगलवार ता. ११-५-१० को हिमालय दर्शन

अधिक वैशाख कृष्ण-१३ बुधवार ता. १२-५-१० को धन तेरस

अधिक वैशाख कृष्ण-१४ गुरुवार ता. १३-५-१० को हिमालय दर्शन

अधिक वैशाख कृष्ण-३० शुक्रवार ता. १४-५-१० को दिपावली अन्नकूट-गोवर्धन पूजा।

श्री नरनारायणदेव का अन्नकूट, श्री धर्मदेव-भक्तिमाता हरिकृष्ण महाराज का अन्नकूट, श्री राधाकृष्णदेव का अन्नकूट, यजमान : श्री शांतिलाल नाथालाल दरजी ( ह. घनश्यामभाई चावडा )

श्री रंग महोल घनश्याम महाराज का अन्नकूट, यजमान : श्री मनुभाई एन. दवे

श्री अक्षरभुवन घनश्याम महाराज का अन्नकूट, यजमान : श्री रजनीभाई महेता

श्री हवेली घनश्याम महाराज का अन्नकूट

श्री गणपति-हनुमानजी का अन्नकूट, यजमान : श्री विपुलभाई कनुभाई वेकरिया

**कांकरिया मंदिर में मारुति यज्ञ**

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में आद्य आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा प्रतिष्ठित बालस्वरुप कष्टभंजन देव के सानिध्य में चैत्र शुक्ल-१५ को भव्य मारुतियज्ञ सम्पन्न हुआ । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भावि आचार्य लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों यज्ञ की पूर्णाहुति की गयी थी। प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, कांकरिया के महंत स्वामी इत्यादि संत मंडलने हनुमानजी की महिमा का सुंदर वर्णन किया था । अन्त में लालजी महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । प.पू. लालजी महाराजश्री ठाकुरजी की तथा हनुमानजी की आरती उतारे थे । हरिभक्तोंने हनुमान चालीसा का पाठ किया था। – पार्षद नरोत्तम भगत

**व्यास पालडी नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी एवं पुरुषोत्तम प्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १३-२-१० से १७-२-१० तक मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धका त्रिदिनात्मक पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने किया था। जिस में अगल-बगल के गाँव में रहने वाले हरिभक्तों ने कथा का रसपान किया था। यह मंदिर आज से करीब ५० वर्ष पूर्व पूज्य योगी स्वामी की प्रेरणा से हरिभक्तों ने बनवाया था। लेकिन समय बीतते मंदिर जीर्ण होने से पुनः जीर्णोद्धार किया गया। प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से ता. १७-२-१० को ठाकुरजी की प्रतिष्ठा धूमधाम से की गयी थी । इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, नारायणवल्लभ स्वामी, देवप्रकाश स्वामी, राजेश्वरानंद ब्रह्मचारी स्वामी पधारे हुये थे। सभी ने अपनी भावना व्यक्त की थी। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। – साधु चैतन्यस्वरुपदासजी

**समौ श्री स्वामिनारायण मंदिर**

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से श्रीहरि का २२९ वां प्रागट्योत्सव

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उपलक्ष्य में धूमधाम के साथ मनाया गया था । गोजारिया आदि गांव के भक्त भी इस प्रसंग पर लाभ लिये थे । हरिभक्त दर्शन करके खूब धन्य हो गये । मंदिर तथा ठाकुरजी का सिंहासन खूब सुंदर ढंग से सजाया गया था । - श्री ननरारायणदेव युवक मंडल समौ

### श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर

ऐतिहासिक तथा धार्मिक नगरी वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में महंत स्वा. हरिसेवादासजी की प्रेरणा से अधिक मास दरम्यान अ.नि. काशीबा की तरफ से श्रीमद् सत्संगीभूषम सप्ताह पारायण अधिक वैशाख शुक्ल-१ से सप्तमी तक किया गया था । कथा वाचक शा. नारायणवल्लभदासजी थे । इस के साथ शिक्षापत्री भाष्य तथा धीरजाख्यान की कथा भी हुई थी । सम्पूर्ण अधिक मास में प्रतिदिन प्रभातफेरी का भी आयोजन किया गया था । सभी सत्संगी भाई-बहनों ने इस का अलभ्य लाभ लेकर धन्य हो गयी । - शा. नारायणवल्लभदासजी, वडनगर

### बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिरका ५ वाँ पाटोत्सव

अहमदाबाद के हार्द समान बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर ५वाँ पाटोत्सव अधिक वैशाख शुक्ल-७ ता. २१-४-२०१० को संत-हरिभक्तों की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया था ।

बोपल मंदिर के पाटोत्सव के यजमान तथा मंदिर के निर्माता तथा श्री नरनारायणदेव को समर्पित स्कीम कमेटी के सदस्य श्री रतिभाई खीमजीभाई पटेल तथा पुत्र केतनभाई एवं पौत्र कपिलने श्रीहरिकृष्ण महाराज के पूजन का अलभ्य लाभ लिया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री पाटोत्सव में पधारकर ठाकुरजी की आरती उतारे थे ।

इस प्रसंग पर रतिभाई पटेल के आग्रह पर अहमदाबाद के महंत स्वामी, देवप्रकाश स्पामी, छोटे पी.पी. स्वामी, शा. रामकृष्णदासजी, कृष्णवल्लभदासजी इत्यादि संत पधारकर नानाविधउपदेश दिये थे । यहाँ के महंत हरिवल्लभ स्वामी, को. अमृतभाई, श्री अरबिंदभाई, श्रीमहादेवभाई इत्यादि संत-हरिभक्तों ने प्रेरणात्मक सेवा की थी । सभा संचालन व्रजवल्लभदासने किया था । अहमदाबाद मंदिर के उत्सवीय मंडलने कीर्तन भजन करके आनन्द प्रदान किया था । सभी दर्शन एवं प्रसाद लाभ लिये थे । - प्रवीणभाई उपाध्याय

## मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

### सुरेन्द्रनगर के शिखरबद्ध मंदिर में श्रीहरि जयंती उत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से श्रीहरि का २२८ वाँ प्रागट्योत्सव चैत्र शुक्ल-९ के दिन मनाया गया था । जिस में प्रातः समूह महापूजा, श्री ठाकुरजी का अभिषेक, अखंड धुन, कथा, दोपहर को १२ बजे राम जन्मोत्सव की आरती, सायंकाल भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी ।

रात्रि में १०-१० बजे श्रीहरि का प्रागट्योत्सव हजारो हरिभक्तों की उपस्थिति में मनाया गया था । समग्र आयोजन प्रेमवल्लभदासजीने किया था । इस प्रसंग पर गुजरात, संदेश तथा दिव्य भास्कर समाचार पत्र के संपादक प्रातः सायं का समाचार प्रकाशित किये थे । - शैलेन्द्रसिंह झाला

### लींबडी श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर में पुरुषोत्तम मास दरम्यान नाना उत्सव मनाये गये थे । स्वामी भक्तवत्सलदास तथा वंदनप्रकाशदासने सेवा का लाभ लिया था । बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के नित्य अलग-अलग अलंकारो में दर्शन की व्यवस्था की गयी थी । हरिभक्त दर्शन का लाभ लेकर धन्य हो गये । - को. वंदनप्रकाशदास

### श्रीजीनगर (ता. हलवद)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से चैत्र कृष्ण-८ को ठाकुरजी का १३ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये १२ धंटे की धुन की गयी थी । गाँव के हरिभक्त ठाकुरजी का दर्शन करके खूब प्रसन्न हुये थे ।

- मोरी मगनभाई

### खारवा मंदिर का पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से पुरुषों के तथा महिलाओं के मंदिर में वार्षिक पाटोत्सव ता. २३-४-१० को प.पू. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में धूमधाम के साथ मनाया गया था । ठाकुरजी का अभिषेक एवं अन्नकूट दर्शन के दर्शन का लाभ सभी को मिला था । स्वा. प्रेमवल्लभदासजी एवं के.पी. स्वामी की देखरेख में कार्य बहुत सरल हो गया था । भक्तों ने दर्शन का लाभ लिया था । - शैलेन्द्रसिंह झाला

# विदेश सत्संग समाचार

### ह्युस्टन टेक्सास श्री स्वामिनारायण मंदिर दशाब्दी महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा को दश वर्ष पूर्ण होते ही १२-३-१० से २१-३-१० तक दशाब्दी महोत्सव मनाया गया था।

इस प्रसंग पर श्री योगेन्द्रभाई भट्टने श्रीमद् भागवत का कथा रसपान करवाया था। जिस में हजारो भक्त उपस्थित होकर इसका लाभ लिये थे।

इसके अलांवा हरियाग, मारुति यज्ञ, विष्णुयाग का भी आयोजन किया गया था। दिनेशभाई जोषी ने सम्पूर्ण विधिकरवायी थी।

इस प्रसंग पर धर्मकुल पधारकर सभा को सुशोभित किया था। बहनों की सत्संग सभा में प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी। प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से किचन हाल का खात पूजन संपन्न हुआ था।

इस प्रसंग पर जेतलपुर से पू. पी.पी. स्वामी तथा अहमदाबाद से पू. निर्गुणदासजी पधारे थे।

यहाँ के महंत आनंद स्वामी की प्रेरणा से सेवा भावी हरिभक्तों ने खूब उत्तम सेवा की थी।

प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों ठाकुरजी का दशाब्दी पाटोत्सव सम्पन्न हुआ था।

प्रासंगिक सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने मार्च २०१० से २०११ तक म्युझियम वर्ष के रुप में मनाने की आज्ञा की। विशेष रुप में प.पू. बड़े महाराजश्री जो दिव्य संकल्प मूर्ति हैं स्वयं पधारे हुये थे। डॉ. दिनेशभाई तथा मीनाबहन ने म्युझियम के लिये उत्तम धन राशी भेंट करके प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा प्राप्त की थी। इस अवसर पर हजारों हरिभक्तोंने म्युझियम के लिये दान भेंट दिया था।

– रमेशभाई पटेल, सेक्रेटरी

### I.S.S.O. के नूतन चेप्टर पिथोरिया में चलती सत्संग प्रवृत्ति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से शिकागो मंदिर के महंत जे.पी. स्वामी तथा स्वा. हरिप्रसाददासजी की प्रेरणा से ११ अप्रैल को भव्य शाकोत्सव मनाया गया था।

ठाकुरजी के समक्ष शाकोत्सव का प्रदर्शन करके शाकोत्सव की महिमा समझायी गयी थी। इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को फोन पर आशीर्वाद दिया था।

इस प्रसंग पर शिकागो ब्लोमिग्टन, जेक्सन, मेकलीन, पिथोरिया, लीकन, इत्यादि विस्तारों से २७० जितने हरिभक्त पधारे थे। शिकागो से जब घनश्याम महाराज पधारे उस समय होल में आनंद की लहर फैल गयी थी। सभी गर्वानृत्य किये थे। यहाँ के हरिभक्तों की निष्ठा सराहनीय है।

यहाँ पर प्रति रविवार को ६ से ९ बजे तक सभा का आयोजन किया जाता है। सभा में आबाल वृद्ध परिवार के सभी सदस्य आते हैं। – रमेशभाई पटेल सांकापुरवाला

### विहोकन श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री का प्रागट्योत्सव

यहाँ के मंदिर में १४ मार्च २०१० को सायंकाल ५ से ९ बजे तक बहनों की सभा में सौम्यकुमार-सुव्रतकुमार, संत, पार्षद मंडल, उपस्थित हरिभक्तों ने प.पू. बड़े महाराजश्री का प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया था।

यहाँ के महंत स्वामी, तथा अन्य संत प.पू. बड़े महाराजश्री की ३५ वर्ष की अविरत सत्संग प्रवृत्ति का गुणगान करते थके नहीं। प.पू. बड़े महाराजश्री की महिमा के साथ श्री स्वामिनारायण म्युझियम का महत्व बोर्ड पर फोटो के साथ लगाया गया था।

पू. निर्गुणदासजीने म्युझियम का महत्व समझाया था। हरिनंदन स्वामीने भी म्युझियम का महत्व समझाया था। यजमान परिवार की बहनों ने पू. बड़ी गादीवाला का पूजन किया था। सत्संगी बहनोने बिन्दु राजा का पूजन किया था। श्री सौम्यकुमार एवं श्री सुव्रतकुमार का भी पूजन अर्चन किया गया था। दोनो कुमारों ने आशीर्वाद में कहा कि म्युझियम के लिये प.पू. महाराजश्री अथक परीश्रम कर रहे हैं, इस में जो भी सहयोग करेगा उसका अवश्य भला होगा।

– प्रवीणभाई

### वोशिंग्टन डी.सी. I.S.S.O. चेप्टर

वोशिंग्टन बुवी मेरीलेडन् में २०-२-१० को सायंकाल ४-३० से ८-३० तक चर्च के पेरीस होल में सत्संग सभा हुई थी। ५ मार्च को रात्रि में ७ बजे से १० बजे तक ३ घन्टे तक डेइजन इन के मिटिंग होल में सभा हुई थी। अहमदाबाद से पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा न्युजर्सी से माधव स्वामी अपनी अमृतवाणी का लाभ दिये थे। प.पू. बड़े महाराजश्री जब

पधारे उस समय बोस्टन, न्युजर्सी, शिकागो तथा डिट्रोइट से हरिभक्त भी पधारे थे । प.पू. बड़े महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद देते हुये कहा कि भगवान तथा भगवान के भक्तों को पहचान कर विमुखों से सावधान रहना । सभा मे म्युझियम की डी.वी.डी. बतायी गयी थी । हरिभक्तोंने म्युझियम के लिये सुन्दर सेवा की थी ।

अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । यहाँ सतत तीन दिन तक प.पू. बड़े महाराजश्री के दर्शन का लाभ सभी ने लिया था तथा उदार भाव से म्युझियम के लिये भेंट भी दिया था ।

२० मार्च सायंकाल ४-४५ से ८-४५ तप ४ घंटे तक धुन का आयोजन किया गया था । धून शा.स्वा. निर्गुणदासजीने सेलफोन पर करवा कर श्रीहरि का सुंदर गुणानुवाद करवाया था । - कनुभाई पटेल

**अमेरिका के बायरन में भव्य मंदिर की शिलान्यास विधि**

यहाँ के मंदिर आई.एस.एस.ओ. द्वारा प.पू. बड़े महाराजश्री का संकल्प पूरा किया गया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों मंदिर की विधिसंपन्न हुई थी ।

जेतलपुर से पू.पी.पी. स्वामी संतो के साथ एटलान्टा पूर्वायोजन के लिये पधारे थे ।

ता. ११-३-१० को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब पधारे उस समय सभी चेप्टरों से बड़ी संख्या में हरिभक्त उपस्थित होकर स्वागत किये थे ।

ता. ११-३-१० एकादशी को प.पू. आचार्य महाराजश्री का स्वागत एटलान्टा ज्योजिया तथा आई.एस.एस.ओ. के प्रत्येक चेप्टरो के हरिभक्तों ने किया था ।

ता. १२-३-१० को हरिभक्तों के घरों में पू. महाराजश्री श्रीपदार्पण किये थे । श्रीमहेन्द्रभाई पटेल के घर से पोथीयात्रा निकाली गयी थी । सभा खंड में पू. पी.पी. स्वामीने श्रीहरि वनविचरण की बड़ी सुन्दर कथा की थी ।

धर्मवंशी के जयघोष के साथ प.पू. महाराजश्री स्वस्थान घर पधारे थे । १३-३-१० को प्रातः काल हरिभक्तों के घर पदार्पण करके सभा मंडप में पधारे थे। सभा में पू.पी.पी. स्वामी की कथा अन्य संतो के प्रवचन, गोकुलभाई पटेल की सत्संग सागर नामक पुस्तक का विमोचन किया गया था । १४-३-१० को प्रातः भूमि पूजन प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से सुवर्ण के इंट से भूमि पूजन किया गया था ।

प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुये कहा कि यह भूमि छपैयाधाम के समान समझियेगा ।

प.पू. महाराजश्री ने बताया कि इस मंदिर में पांच विभाग होगा, जिस में प्रथम भाग में श्री धर्मदेव भक्तिमाता, अयोध्याप्रसादजी महाराज बिराजमान होंगे । दूसरे भाग में श्री नरनारायणदेव तीसरे भाग में बाल स्वरुप घनश्याम महाराज, चौथे भाग में राधाकृष्णदेव पांचवे भाग में लक्ष्मीनारायणदेव विराजमान होंगे महाराजश्री के संकल्प होते ही १३ एकड़ जमीन मिली, जिससे पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

सभा में मुख्य यजमानश्री गोकलभाई पटेल तथा भरतभाई, महेशभाई तथा अन्य यजमान प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन किये थे ।

इस सेवा यज्ञ में जयेन्द्रभाई पटेल, अश्विनभाई पटेल, नवीनभाई पटेल, दशरथभाई, जगदीशभाई, मनीषभाई, भरतभाई, विरनभाई, अनुजभाई, अल्पेशभाई, दिनेशभाई, जयेशभाई इत्यादि अनेक भक्त समर्पित हुये थे ।

**लेस्टर मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री कां प्रागट्योत्सव सम्पन्न**

अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर, लेस्टर, इग्लेन्ड में पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा कष्टभंजन देव हनुमानजी की दिव्य प्रेरणा से प्रातः स्मरणीय, विश्व वंदनीय प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्रागट्योत्सव दि. ३-४-१० को शनिवार को धूमधामपूर्वक शाम के ६ से ८ के दौरान मनाया गया था । उसके उपलक्ष्य में कीर्तन भक्ति तथा रास का आयोजन मंदिर में किया गया था । प्रासंगिक प्रवचन प.पू. स्वामीश्री सत्यप्रकाशदासजी तथा मंदिर के पूजारी श्री धर्मेन्द्रभाई भट्टने किया था । मंदिर के सहमंत्रीश्री किरनभाई भावसारने प.पू. बड़े महाराजश्री के जीवन का सभा में वर्णन किया था । प.भ. मूलजीभाई काचाने यजमान पद का लाभ लिया था । - किरन भावसार

**I.S.S.O. सान फान्सिस्को चेप्टर**

केलिफोर्नीया के फेमोन्ट हिंदु मंदिर में अपने आई.एस.एस.ओ. सान फान्सिस्को चेप्टर में २७ अप्रेल को

श्री स्वामिनारायण जयंती के अवसर पर एल.ए. मंदिर से शा. धर्मकिशोरदासजी पधारे थे। उन्होने सर्वोपरि श्रीहरि का तथा श्री राम भगवान का महिमा खूब सुंदर रुप से बताया था। हरिभक्तों ने ठाकुरजी के पालने में झुलाकर लाभ लिया था। सभा में धून-कीर्तन किया गया था। ३-३० बजे सभा प्रारंभ हुई थी। महेसाणा में कशलीबा के चमत्कार के सम्बन्धमें बताये थे। लोस एंजलेस मंदिर में दिसम्बर में आयोजित दशाब्दी महोत्सव की जानकारी दी गयी थी। श्री प्रभातभाई ने आभार विधिकिये थे। प.पू. महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है। - प्रशांत धोलकिया

**श्री स्वामिनारायण मंदिर ओकलेन्ट का दूसरा पाटोत्सव संपन्न**

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव ता. ३-४-१० से ४-४-१० तक मनाया गया था।

अपने इस मंदिर में देश विदेश से धर्मप्रेमी लोग दर्शन के हेतु अवश्य आतें हैं। यहाँ आई.एस.एस.ओ. द्वारा युवानों के लिये सांस्कृतिक क्लासीस, स्वास्थ्य जागृति अभियान प्रवचन तथा अन्य कम्युनिटी तथा धार्मिक कार्यक्रमो का आयोजन किया जाता है।

पाटोत्सव प्रसंग के प्रथम दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रारंभ स्वामी भजन प्रकाशदास तथा अन्य हरिभक्तों द्वारा नंदसंतो के कीर्तनो से हुई थी। उसके बाद हृदय परिवर्तन हो जाय ऐसा युवा हरिभक्तों द्वारा नाटक प्रदर्शित किया गया था। हमारे लाडुदानजी कवि का श्रीहरि के मिलने पर जो हृदय परिवर्तन हुआ था। वहीं नाटक किया गया था। श्री रविभाई शास्त्री के दिग्दर्शन अनुसार सुंदर आयोजन हुआ था। इस प्रसंग पर ५०० जितने भाविकोने लाभ लिया था।

४ एप्रिल रविवार के प्रातः ओकलेन्ड मंदिर में अभिषेक स्वामी रामकृष्णदास तथा साधु भजनप्रकाशदासने किया था। ठसके बाद हरिभक्तो द्वारा बनाए हुए सुंदर पवित्र पक्वानों का अन्नकूट भोग लगाया गया। इस प्रसंग पर मंदिर को सुंदर सजाया गया था। जिस में ओस्ट्रेलीया, यु.एस.ए. तथा यु.के. तथा न्युझीलेनड् के कई हरिभक्तों के साथ दर्शन हेतु पधारे थे। अन्नकूट आरती प्रसंग पर यहाँ के सांसदश्री के. एस. बक्षी दर्शन हेतु पधारे थे। मंदिर में दर्शन करके निरीक्षण करके भावुक हो गये थे।

हमारे इस मंदिर के निर्माता तथा श्री नरनारायणदेव के दृढ आश्रित प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेलने सेवा भावी स्वयं सेवको का धन्यवाद किया था। हमारे श्री सुरेशभाई अमीन को उनकी अनन्य सेवा के लिये प्रमाणपत्र दिया गया। स्वामीने सभा में श्रीजी महाराज, धर्मकुल तथा इस मंदिर का महत्व सजाया था। हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री इस प्रसंग पर खास उपस्थित रहनेवाले थे। परंतु संजोगवश पधार नही सके। इस कारण विडियो रेकोर्डींग द्वारा आशीर्वाद दिये थे। १००० जितने हरिभक्तोने दर्शन का लाभ लेकर प्रसाद ग्रहण करके विदा हुए थे।

**अमेरिका आई.एस.एस.ओ. "सेवा" द्वारा प्रवृत्तियाँ**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद-आज्ञा से अमेरिका में इसो "सेवा" संस्था द्वारा अंतिम चार महिने में अनेक हेल्थ क्लिनिक का आयोजन भिन्न भिन्न जगह पर किया था।

जनवरी २०१९ से एप्रिल २०१० तक हेती में हुए भूकंपग्रस्तो की मदद-सेवा की गई थी।

फेब्रुआरी-१० से मार्च-१० तक ह्युस्टन, एक्सास, सिनेमेन्स साउथजर्सी, तथा स्ट्रोंग विले (ओयाहो), हेल्पकेर के फ्री केम्प का आयोजन हुआ था। २४ एप्रिल-१० हमारे ओकलेन्ड श्री स्वामिनारायण हिन्दु मंदिर में प.भ. डॉ. कांतिभाई के पूर्ण सहयोग से सुबह १० से २ "हेल्थ डे फेर" का आयोजन किया था। २४ एप्रिल को भी हमारे कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर का डेन्टल हेल्थ फेर का आयोजन किया था। - आई.एस.एस.ओ. "सेवा"

**दाहोह श्री स्वामिनारायण मंदिर**

यहाँ दाहोद श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ३-४-१० से ता. ४-४-१० तक होमात्मक महापूजा नगर सेवा सपन दाहोद कम्युनिटी होल में रखी गई थी। उमरेठ के श्री रमेशभाई शुक्ल तथा धीरेनभाई शास्त्रीने विधिकरवाई थी।

ता. ४-४-१० के दिन वड़ताल से प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे। तथा धामोधाम से संत गण पधारे थे। वडताल मुंबई भूलेश्वर के स.गु. शा.स्वा. धर्मप्रसाददासजी आदि संतोने प्रेरक वाणी का लाभ दिया था। मंडल के प्रमुख श्री नटवरलाल लालपुरवाला तथा श्री कनुभाई शाहने प.पू. महाराजश्री का सन्मान पूजन किया था। प.पू. महाराजश्रीने समस्त सभा को दिव्य आशीर्वाद दिया था। - कनुभाई शाह

॥ श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम् ॥

# શ્રી નરનારાયણ દેવ નૂતન મંદિર મહોત્સવ

## નિમંત્રણ

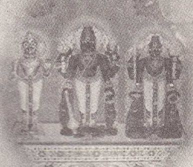

શુભારંભ
તા. ૧૫-૦૫-૨૦૧૦,
વૈશાખ સુદ-૨

પૂર્ણાહુતિ
તા. ૨૩-૦૫-૨૦૧૦, વૈશાખ સુદ-૧૦

તા. ૧૪-૦૫-૨૦૧૦ શ્રીનરનારાયણદેવ વિશ્વયુવા સત્સંગ સંમેલન – બપોરે ૩:૦૦ કલાકે પોથીયાત્રાનો પ્રારંભ

તા. ૧૫-૦૫-૨૦૧૦ પારાયણના પ્રથમ દિને દીપ પ્રાગટ્ય

તા. ૧૬-૦૫-૨૦૧૦ ૧૮૮ કુંડી મહાવિષ્ણુયાગ પ્રારંભ

તા. ૧૭-૦૫-૨૦૧૦ આંતરરાષ્ટ્રીય સમૂહ મહાપૂજા–શ્રીગણપતિ, હનુમાનજી, સુર્યનારાયણ, શિવપાર્વતી ની પ્રતિષ્ઠા

તા. ૧૮-૦૫-૨૦૧૦ નૂતન મંદિર લોકાર્પણ વિધિ. શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાને પ્રતિષ્ઠિત શ્રીનરનારાયણ આદિ ભગવત્સ્વરૂપોની નૂતન મંદિરમાં પધરામણી, મહાભિષેક, અન્નકૂટદર્શન.

તા. ૧૯-૦૫-૨૦૧૦ જીર્ણ પ્રસાદી મંદિરમાં નૂતન ભગવત્સ્વરૂપોની પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા.

તા. ૨૦-૦૫-૨૦૧૦ વિવિધ આકૃતિઓથી સુશોભિત વિવિધ રથોમાં શ્રીઠાકોરજીની ભવ્યાતિભવ્ય નગરયાત્રા.

તા. ૨૨-૦૫-૨૦૧૦ શ્રી ઠાકોરજીના વેદવિહિત અષ્ટ રાજોપચારથી વૈદિક મંત્રોચ્ચાર સાથે પૂજન

**ઉત્સવનાં પ્રત્યેક પ્રસંગો પ.પૂ.ધ.ધુ. ૧૦૦૮ આચાર્ય શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે થશે.**

**વડતાલગાદીના પ.પૂ.ધ.ધુ. ૧૦૦૮ આચાર્ય શ્રી રાકેશપ્રસાદજી મહારાજશ્રી દર્શન આશીર્વાદ પાઠવશે.**

આ પ્રસંગે સંપ્રદાયના વિદ્વાન સંતો પધારી દર્શન–આશીર્વાદ આપશે, સનાતન ધર્મના જગદ્ગુરુ શ્રીરામાનુજાચાર્ય, શ્રીશંકરાચાર્ય, શ્રીવલ્લભાચાર્યનાં ગાદિપતિઓ તથા દેશભક્તો તથા વિવિધ ક્ષેત્રે લોક પ્રતિષ્ઠિત રાજકીય પુરૂષો પધારશે.

દરરોજ રાત્રે ભક્તિ સંગીતના કાર્યક્રમો યોજાશે જેમાં અનૂપ જલોટા જેવા પ્રખ્યાત સંગીતજ્ઞ પુરૂષો પધારશે.

વેદપાઠી બ્રાહ્મણો ધ્વારા ચતુર્વેદ પારાયણ, સંપ્રદાયના નંદ સંતોનું સાહિત્ય, વાંચન અને પ્રદર્શન.

શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્રની અખંડ ધૂન. લેખન અને પ્રદર્શન, ૧૦૮ સંહિતા પાઠ, અદ્યતન ટેક્નોલોજીનું આર્કષક 3D દ્વારા શ્રીહરિ ચરિત્ર દર્શન તેમજ ભારતીય નૃત્ય, રાસોત્સવ, સંપ્રદાયના ઈતિહાસિક રૂપકોનું આયોજન કરવામાં આવેલ છે. શ્રી નરનારાયણ દેવ મેડીકલ કેમ્પ ૨૦૧૦નાં કુલ ૮ કેમ્પનું આયોજન સફળ રહ્યુ.

**આ દિવ્ય મહોત્સવમાં આપ સૌને સપરિવાર પધારવા નેહ નિતરતું નિમંત્રણ પાઠવીએ છીએ.**

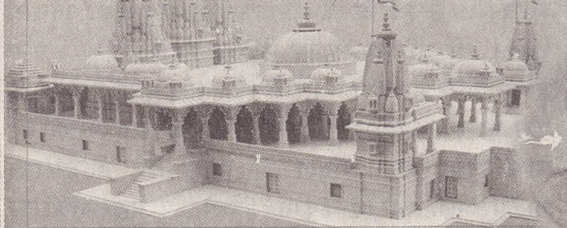

નિમંત્રક : સ.ગુ. મહંત પુરાણી સ્વામી શ્રી ધર્મનંદનદાસજી

:: આયોજક ::
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, ભુજ–કચ્છ,
ફોન. : (૦૨૮૩૨) ૨૫૦૨૩૧/૩૩૧

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद ( गुजरात ) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद ( गुजरात ) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

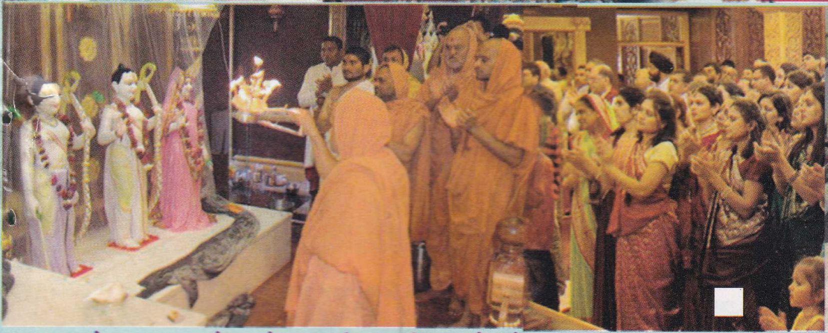

( १ ) जेतलपुरधाम में पाटोत्सव की आरती उतारते हुये प.पू. महाराजश्री ( २ ) जेतलपुरधाम की प्रासंगिक सभा में पू. पी.पी. स्वामी द्वारा लिखी गयी पुस्तक का विमोचन करते हुये पू. महाराजश्री साथ में महंत स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा संत ( ३ ) सुरेन्द्रनगर स्वा. मंदिर द्वारा श्रीहरि जयंती प्रसंग पर नगर यात्रा ( ४ ) कांकरिया मंदरि में मारुति यज्ञ की पूजन विधिकरते हुये पू. महाराजश्री तथा पू. लालजी महाराजश्री एवं संत मंडल ( ५ ) शिकागो मंदिर में कथा सुनते हुये पू. पी.पी. स्वामी तथा सभा में पू. जे.पी. स्वामी तथा पू. हरिप्रसाद स्वामी एवं यजमान परिवार आरती उतारते हुये ( ६ ) न्युजीलेन्ड -ओकलेन्ड मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर आरती उतारते हुये शा. राम स्वामी एवं संत समुदाय, दर्शन का लाभ लेते हुये हरिभक्तजन ( ७ ) लेस्टर ( यु.के. ) मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री के प्रागट्योत्सव प्रसंग पर कीर्तन-भजन करते हुये हरिभक्त

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/9-11 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011

( १ ) बायरन ज्योर्जिया में मंदिर का खात पूजन करते हुये प.पू. महाराजश्री साथ में शा.पी.पी. स्वामी तथा सभा में आशीर्वाद देते हुये प.पू. महाराजश्री ।

( २ ) सीडनी मंदिर में पंचम पाटोत्सव अभिषेक करते हुये प.पू. महाराजश्री के साथ शा. रामकृष्णदासजी

( ३ ) सीडनी में प.पू. महाराजश्री की उपस्थिति श्री नरनारायणदेव युवक मंडल आयोजित शिबिर

( ४ ) सिनेमेंश्टन मंदिर में श्री हनुमान जयंती प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुये शा. विश्वप्रकाशदासजी

( ५ ) फरोलिडा मंदिर में शाकोत्सव दर्शन

( ६ ) बोस्टन मंदिर में श्रीहरि जयंती प्रसंग पर कीर्तन भक्ति करते हुये हरिभक्त


**Museum Year**
March 2010 - March 2011

Shree Swaminarayan Museum

**ઈ.સ.૨૦૧૦-૧૧નું વર્ષ "મ્યુઝિયમ વર્ષ"**

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી ૧૦૦૮શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી માર્ચ ૨૦૧૧નું વર્ષ "મ્યુઝિયમ વર્ષ" તરીકે જાહેર કરવામાં આવે છે.

**ઉદ્‌ઘાટન ૮મી માર્ચ ૨૦૧૧**

**સંવત ૨૦૬૭ ફાગણસુદ ત્રીજ શ્રી નરનારાયણ દેવનો પાટોત્સવ**

www.swaminarayanmuseum.com/org


Praful Kharsani